का प्यारा मासिक
85

मिलिन्द

बच्चों का प्यारा मासिक

वर्ष 1 : अंक 2
सितम्बर 1965

लेखक रत्नप्रकाश शील सम्पादिका शशिप्रभा अग्रवाल
प्रबन्धक वेद प्रकाश कला-निदेशक मानसिंह सहायक नीरद
परामर्शदाता अक्षयकुमार जैन क्षेमचन्द्र सुमन जयप्रकाश भारती
पत्रव्यवहार मिलिन्द 3746 नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली—6

मिलिन्द परिवार के नाम

मिलिन्द का प्रवेशांक आप सबको पसन्द आया होगा, ऐसी आशा है। उसमें आपने 'धरती के विकास' की कहानी पढ़ी थी। इस अंक में आप उससे भी कहीं अधिक रुचिकर कहानी पढ़ेंगे। प्रस्तुत कहानी है स्काउटिंग और गुप्तचर विभाग के मिले-जुले सिद्धान्तों की। इसे पढ़ कर आप स्काउटिंग के विषय में बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें जानेंगे। इस कहानी से आप को यह भी पता लग जाएगा कि पुलिस किसी अपराधी को कैसे पकड़ती है।

प्रस्तुत अंक की कहानी के नायक आपके पुराने परिचित मिलिन्द, मुन्ना, मंजू और मनोज ही हैं। वे चारों स्काउटिंग सीखते हैं। वे सदैव ऐसे काम करते हैं जिनसे उनका नाम होता है। स्काउटिंग सब बच्चों को सीखनी चाहिए। इससे वे निखरते हैं।

अच्छा तो, एक बात और बताती हूं। वह यह कि मिलिन्द मासिक में आपको प्रति माह एक ऐसा ही उपन्यास पढ़ने को मिलता रहेगा जो मनो-रंजन के साथ-साथ आपके ज्ञान को भी विकसित करेगा। साथ ही उस उपन्यास में आपको सभी रस मिलेंगे। वह उपन्यास आपकी बुद्धि को निखारेगा और आपको वे सब बातें बताएगा, जिनको पढ़

कर आप संसार की प्रगति के विषय में जानेंगे।

भारत में इस प्रकार का प्रयोग सर्वथा मौलिक है। इस प्रकार के शिक्षात्मक बाल-साहित्य के लेखक भी इने-गिने हैं; किन्तु हमारा निश्चय है कि 'मिलिन्द' सभी व्यवधानों पर विजय पाता बराबर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहेगा। मिलिन्द के लेखक श्री रत्नप्रकाश शील वैज्ञानिक बाल-साहित्य पर केन्द्रीय सरकार द्वारा सम्मानित और पुरस्कृत हो चुके हैं। मिलिन्द के प्रत्येक अंक में आप उनके मौलिक शिक्षात्मक उपन्यास पढ़ेंगे।

इस प्रयास में मिलिन्द परिवार के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग मिलना आवश्यक है। मुझे आशा है कि आप मिलिन्द का प्रत्येक अंक सावधानी से पढ़ेंगे और उस पर अपने सुझाव प्रेषित करेंगे।

मिलिन्द के प्रवेशांक का सभी पाठकों ने विशेषतः बालकों ने, जिस रूप से शानदार स्वागत किया है उनके प्रति मैं आभारी हूं। साथ ही उनके इस बौद्धिक चयन पर मैं अपनी ओर से बधाई देती हूं। मिलिन्द प्रकाशन के सभी सहयोगियों को धन्यवाद दे कर मैं हर्ष का अनुभव करती हूं।

सम्पादिका

आपके पत्र

- मिलिन्द का प्रवेशांक, बहुत खूब। वाकई यह एक नया प्रयोग है। कामयाबी की गारंटी देता हूं।

—सरस्वती कुमार दीपक बम्बई

- मिलिन्द के माध्यम से बाल-साहित्य के माथे पर मौलिक-परम्परा का कुंकुम-टीका करने के लिए बधाई। प्रथम अंक ने इस दिशा में एक नई परम्परा स्थापित की है, प्रयास सफल रहा है।

—वीरेन्द्र मिश्र नई दिल्ली

- मिलिन्द की पहली प्रति दिखते ही मैंने खरीद ली, क्योंकि उसका मुखपृष्ठ ही बहुत मोहक था। उपन्यास पढ़ा तो महसूस हुआ कि खुद उस दुनिया की सैर कर रहा हूं। इतने सुन्दर प्रकाशन के लिए बधाई।

—रवीन्द्रनाथ राजनांदगांव

- मिलिन्द का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। हार्दिक बधाई। निःसंदेह गेट अप, छपाई, चित्र सुन्दर हैं। 'मजेदार खेल', 'इमरतियों के बंडल', 'चित्र पहेली' आदि स्तम्भ पसन्द आए।

—नरेश कुमार 'बेचैन' बहराइच

- मिलिन्द एक सांस में पढ़ गया। वस्तुतः यह बच्चों ही के लिए नहीं अपितु बड़ों के लिए भी अत्यन्त लाभदायक है।

—राम अवतार रुड़की

नरसिंह राव दीक्षित
शिक्षा मंत्री

भोपाल, मध्यप्रदेश
1190/शि. म./65
5 अगस्त 1965
श्रावण, 1887

प्रिय शील जी,

आपका पत्र दिनांक 29-7-65 तथा उसके साथ बाल मासिक मिलिन्द का एक अंक प्राप्त हुआ। अंक सुन्दर प्रतीत होता है। सामग्री भी रोचक है। आशा है, बालक और युवक दोनों का ही वह प्रिय पत्र बन सकेगा।

आपका
हस्ता० नरसिंह राव दीक्षित

श्री रत्नप्रकाश शील
3746, नेताजी सुभाष मार्ग,
दिल्ली-6.

मिलिन्द, मनोज, मुन्ना और मंजू एक गरीब किसान के बच्चे थे। एक दिन उनकी भेंट जादूगर बिनबिल्ला से हो गई। जादूगर उन बच्चों का दोस्त बन गया। वह उनको बढ़िया-बढ़िया बातें बताता, अनोखे खेल दिखा कर उनका मन बहलाता। जादूगर बम्बई का रहने वाला था। उसने किसान को बम्बई में नौकरी दिला दी। बच्चे बम्बई आ गए। जादूगर भी उनके मकान के पास बनी हवेली में रहने लगा। एक दिन मिलिन्द, मनोज, मुन्ना और मंजू जब जादूगर बिनबिल्ला की हवेली पर पहुंचे तो वहां कोहराम मचा था। चारों ओर पुलिस ही पुलिस थी। अब आगे पढ़ो···

1. भयानक चोरी

हवेली में पुलिस को देख कर बच्चों का माथा ठनका। वे सब दौड़ते-दौड़ते हवेली में घुसे। पुलिस के कई सिपाहियों ने उनको रोकना चाहा, किन्तु वे रुके नहीं। अन्दर बाबा पुलिस इन्सपैक्टर को रिपोर्ट लिखा रहे थे। उनकी दोनों आंखें तर थीं। बच्चे समझ गए कि जरूर कोई गड़बड़ हुई है। वे वहीं एक कोने में चुपचाप खड़े हो गए।

रिपोर्ट लिखने के बाद इन्सपैक्टर अपने डण्डे को घुमाता बाहर चला गया। चारों बच्चे बाबा से लिपट गए।

'बाबा, क्या हुआ ? हमें तो बताओ ? हमें तो बताओ।' उन सबने कहा।

बाबा ने मुसकराने की चेष्टा की, बोला—'मैं लुट गया बच्चो ! रात मैं कहीं बाहर चला गया था। मेरे पीछे कोई चोर सारी हवेली की वस्तुएं उठा कर ले गया। मेरा सारा बहुमूल्य सामान चोरी चला गया।'

'क्या वे कुर्सियां भी चोर ले गया, जिन पर बैठ कर हम आकाश में गए थे ?' मंजू ने पूछा।

'हां, सब कुछ ले गया।' भर्राए गले से बाबा बोला। वह उठ

कर कमरे में टहलने लगा। बच्चे बाबा के इस दुख पर बड़े दुखी थे। काश, चोर को पकड़ना उनके वश की बात होती।

काफी देर तक वे गुमसुम वहीं बैठे रहे। उनको यह समझ ही न आई कि बाबा के इस दुख में वे किस प्रकार हाथ बटाएं। फिर चुपके से वे सब अपने घर लौट गए।

बाबा के यहां चोरी हो जाने से वे सचमुच बड़े दुखी थे। उनको रह रह कर चोर पर गुस्सा आ रहा था। वे समझते थे कि शीघ्र ही बाबा इस चोरी की बात भूल जाएंगे और उनको नए-नए खेल दिखाना शुरू कर देंगे, किन्तु जब बहुत दिन पश्चात् भी बाबा का दुख दूर न हुआ तो एक दिन मिलिन्द ने बाबा से कहा—'बाबा, हमसे आपका दुख नहीं देखा जाता। आप हमें बताइए, हम क्या करें ?'

'अरे तुम लोग क्या कर पाओगे !' बाबा भर्राए गले से बोला—'सारी पुलिस जोर लगा कर हार गई, किन्तु चोर नहीं पकड़ा गया। मैंने दिल्ली से एक बड़ा सी० आई० डी० इन्सपैक्टर बुलाया है। शायद वह चोर का पता लगा सके।'

'क्या नाम है उनका ?' मुन्ना ने पूछा।

'संजय।' बाबा ने उत्तर दिया।

'वह कब आ रहे हैं ?' मंजू ने पूछा।

'अब तक उनको आ जाना चाहिए था।' बाबा ने कहा। फिर वह दरवाजे की ओर देखने लगा।

उसी समय एक लम्बे कद के दुबले पतले मनुष्य ने हवेली के अन्दर कदम रखा। उसके पीछे एक नौकर उसका बैग और बिस्तर उठाए चला आ रहा था। आगन्तुक को देख कर बच्चे उठ कर खड़े

हो गए। बाबा ने मुसकराकर उसका स्वागत किया।

'मैं सब कुछ सुन चुका हूं चाचा जी।' आगन्तुक ने दुख भरे शब्दों में कहा--'मुझे आशा है कि चोर शीघ्र ही पकड़े जाएंगे।'

बच्चे समझ गए कि आगन्तुक दिल्ली का सी० आई० डी० इन्सपैक्टर है। वे उन दोनों से दूर चले गए। एक वृक्ष के नीचे खड़े होकर वे धीरे-धीरे बातें करने लगे।

'यह आदमी तो पूरा बेवकूफ लगता है।'

'इसके बस का नहीं है चोर को पकड़ना।'

'इससे अच्छा काम तो हम लोग कर सकते हैं।'

'लेकिन कर कैसे सकते हैं?'

मंजू के इस प्रश्न का हल वे खोज ही रहे थे कि बाबा ने उनको आवाज दी। सब संजय को टेढ़ी नजरों से देखते हुए बाबा के पास पहुंचे।

'इन से मिलो इन्सपैक्टर,' बाबा ने कहा—'ये हैं मिलिन्द, मनोज, मुन्ना और मंजू। बड़े बहादुर बच्चे हैं।'

संजय ने मुसकरा कर बच्चों से हाथ मिलाया।

'हम आपकी क्या सहायता कर सकते हैं?' मिलिन्द ने संजय से पूछा—'हम चाहते हैं कि चोर शीघ्र से शीघ्र पकड़ा जाए।'

'क्या तुम में से किसी ने चोर को देखा है?' संजय ने उनसे पूछा।

बच्चों ने 'ना' में गर्दनें हिलाईं।

'तब तो मुश्किल है।' संजय ने कहा।

'वाह, मुश्किल क्यों है?' मुन्ना बोला—'आप अकेले हैं। इस लिए आपको चोर का पकड़ना कठिन लग रहा है। हम सब आपके साथ हैं। हमने स्काउटिंग में बहुत-सी बातें सीखी हैं।'

संजय ने मुसकरा कर बच्चों की ओर देखा, बोला—'अच्छा, तो तुम लोग स्काउट भी हो! ठीक है, आज से तुम चारों मेरे सहायक हो। कल से हम पांचों चोर को पकड़ने का प्रयास करेंगे।'

'कल हमें कितने बजे यहां आना है?' मनोज ने पूछा।

'ठीक नौ बजे।'

चारों बच्चों ने इन्सपैक्टर को स्काउटिंग के ढंग पर सैल्यूट किया। फिर वे मार्च करते हुए हवेली से बाहर निकल गए।

अब वे भारत के प्रसिद्ध गुप्तचर संजय के सहायक थे न।

2. स्काउटिंग-स्क्वैड

अगले दिन जब मिलिन्द, मनोज, मुन्ना और मंजू बाबा की हवेली पर पहुंचे तब प्रातः के ठीक नौ बजे थे। इन्सपैक्टर लान में कुर्सी पर बैठा समाचार पत्र पढ़ रहा था। बच्चों को देखकर वह खड़ा हो गया।

'हलो स्काउटिंग-स्क्वैड !' वह मुसकरा कर बोला—'मैंने पांच गुप्तचरों की इस पार्टी का नाम भी सोच लिया है।'

'क्या नाम सोचा है आपने ?' चारों बच्चों ने एक साथ पूछा।

'स्काउटों की इस गुप्तचर टोली का नाम होगा स्काउटिंग स्क्वैड।' संजय मुसकरा कर कहने लगा—'और इसका आफिस भी मैंने बना लिया है।'

'अरे, आप तो हम सबसे तेज निकले !' बच्चे बोले।

इन्सपैक्टर खिलखिला कर हंस पड़ा। बच्चों के साथ वह अपने नए आफिस की ओर बढ़ा।

'हमें तुरन्त काम आरम्भ कर देना है।' इन्सपैक्टर कहने लगा—'मैंने इस सम्बन्ध में सारी तैयारियां कर ली हैं।'

स्काउटिंग स्क्वैड का आफिस हवेली के पीछे की ओर एक छोटे से कमरे में था। कमरे में छोटी-छोटी दो मेजें थीं और पांचों गुप्तचरों

के लिए पांच कुर्सियां। कोने में छोटी-सी एक आलमारी भी रखी थी। सामने की दीवाल-गिरी पर कुछ वैज्ञानिक यंत्र रखे थे।

बच्चे इस आफिस को देख कर बड़े प्रसन्न हुए।

'अब,' इन्सपैक्टर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा--'हमें अपना काम तुरन्त आरम्भ कर देना चाहिए।'

बच्चे भी अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गए।

'हमें क्या करना होगा ?' वे पूछने लगे।

'कुछ करने से पूर्व तुम लोगों को दो तीन बातें ध्यान में रखनी होंगी।' इन्सपैक्टर बोला--'एक तो तुम लोगों को यह याद रखना होगा कि कोई भी यह न जान पाए कि तुम गुप्तचर हो। दूसरे तुमको किसी भी समय घबराना नहीं चाहिए। तीसरे तुमको जो भी काम करना पड़े खूब सोच-समझ कर करना चाहिए। ये सारी बातें तुमको स्काउटिंग में भी सिखाई गई होंगी।'

बच्चों ने सर हिलाए--'ठीक है। हम ऐसा ही करेंगे।'

'अब हम मुख्य बात पर आते हैं।' संजय बोला--'एक साधारण व्यक्ति और एक गुप्तचर के सोचने का ढंग अलग-अलग होता है। तुम लोग चोर के विषय में सोच रहे हो, किन्तु मैं उस सामान के बारे में सोचता हूं, जिसे वह चुरा कर ले गया है।'

'क्यों ?' बच्चों ने प्रश्न किया।

'वह इसलिए कि चोरी गया सामान दो प्रकार का है। एक तो वह सामान जिसे चोर ज्यूं का त्यूं काम में ले सकता है। जैसे नकदी, घी और अनाज। दूसरा सामान वह जिसे चोर या तो कहीं भेजेगा या कहीं बेचेगा, जैसे जादू की कुर्सियां।'

'जादू की कुर्सियों को वह अपने बैठने के काम में भी तो ले सकता

है ।' मुन्ना बोला ।

'नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा ।' इन्सपैक्टर ने मुसकरा कर उत्तर दिया—'ऐसा करने में भांडा फूटने का हमेशा भय रहेगा । कुर्सियां चांदी की बनी हैं । उनको बाहर वह भेज नहीं सकता; क्योंकि सारे रास्तों पर पुलिस सतर्क है । वह उनको अवश्य ही बेच डालेगा ।'

'तब तो उनका पता लगाना अवश्य ही कठिन होगा ।' मनोज बोला—'इतने बड़े शहर में उनके खरीदार का पता कैसे चलेगा ?'

'चलेगा कैसे नहीं !' संजय ने कहा—'सारी कुर्सियां चांदी की हैं । उनको कोई सर्राफ ही खरीद सकता है ताकि गला कर चांदी बेची जा सके । सर्राफ इस शहर में एक ही जगह बैठते हैं ।'

'हां, हां, वे गांधी चौक में बैठते हैं ।' मंजू बोली ।

'शाबास !' इन्सपैक्टर ने उसको शाबासी दी—'तो तुम लोग अभी से ही गांधी चौक के प्रत्येक सर्राफ पर नजर रखो । जहां भी गड़बड़ देखो, तुरन्त 100 पर फोन करो ।'

'यह नम्बर तो 'फ्लाइंग स्क्वैड' का है ।' मनोज बोला ।

'हां, उसे तुरन्त स्काउटिंग-स्क्वैड का नाम बतलाओ । तुम्हारी सहायता के लिए तुरन्त वहां 'फ्लाइंग स्क्वैड' पहुंच जाएगा ।'

काम पाकर चारों बच्चे फुर्ती के साथ उठे । इन्सपैक्टर ने एक बार संक्षेप में सारी बातें उनको पुनः बताईं । बच्चों ने ध्यान से उसकी बातें सुनीं, फिर वे मार्च करते हुए हवेली से बाहर निकले और शहर के गांधी चौक में पहुंच गए ।

गांधी चौक में अजीब हंगामा था । चारों ओर पों-पों, भों-भों । भीड़ इतनी कि तिल रखने भर को कहीं स्थान न था । मिलिन्द, मनोज, मुन्ना और मंजू को लेकर एक चबूतरे पर चढ़ गया । वहां

से सारे गांधी चौक पर पूरी तरह से नजर रखी जा सकती थी। वे चारों सतर्कता से सर्राफों की दूकानों पर आने जाने वालों को देखने लगे।

धीरे-धीरे दो घंटे बीत गए। मनोज ने उकता कर कहा—'हमें इस तरह से कितनी देर और खड़े रहना पड़ेगा ?'

'सब लोग हमें घूर-घूर कर देख रहे हैं।' मंजू कहने लगी।

'यदि चोर को पकड़ने के लिए यह सब कुछ करना पड़ता है तो मैं बाज आया।' मुन्ना ने वहीं बैठते हुए कहा।

इतने में पुलिस का एक सिपाही डंडा घुमाता उनके पास आया। चारों बच्चे सतर्क हो गए। सिपाही ने मिलिन्द से पूछा—'यहां क्यों खड़े हो ?'

'हमें अपने एक मित्र की तलाश है।' मिलिन्द ने उत्तर दिया—'वह गांधी चौक में हमसे बिछड़ गया है।'

सिपाही मुंह बिचका कर वहां से चला गया। उस समय दोपहर के दो बज रहे थे। गांधी चौक में भीड़ कम हो गई थी।

'हमें यहां से हट जाना चाहिए।' मुन्ना ने फुसफुसा कर कहा—'कुछ लोग हमें सन्देहभरी दृष्टि से देख रहे हैं।'

सचमुच उनसे कुछ दूर गोविन्द स्ट्रीट के नुक्कड़ पर खड़ा एक व्यक्ति बच्चों को विचित्र सी दृष्टि से देख रहा था। उसने काले रंग का लम्बा ओवरकोट पहना हुआ था और सर पर फैल्ट-कैप रखी हुई थी। बच्चे चबूतरे पर से कूद कर एक गली में घुस गए।

'हमें उस व्यक्ति पर नजर रखनी चाहिए।' मनोज ने कहा।

'अवश्य।' मिलिन्द बोला—'उस पर सन्देह किया जा सकता है।'

तेजी से उन्होंने गांधी चौक के पीछे वाली सड़क पार की। अब वे गोविन्द-स्ट्रीट के बिल्कुल सामने थे। मुन्ना ने आश्चर्य से कहा—'अरे, वह व्यक्ति किधर गया?'

सचमुच वहां वह व्यक्ति न था। बच्चे सावधानी से चारों ओर देखते हुए गोविन्द स्ट्रीट में घुस गए।

3. चोर से भेंट

गोविन्द स्ट्रीट में अधिकतर व्यापारियों के गोदाम थे। कुछ दूर जाने पर बच्चों की दृष्टि काहनचन्द सर्राफ के गोदाम पर पड़ी। नीले रंग की दो एम्बैसेडर कारें गोदाम के बाहर पटरी पर खड़ी थीं। ओवरकोट और फैल्ट कैप पहने एक व्यक्ति एक कार पर झुका हुआ सिगरेट पी रहा था। बच्चों को देखकर उसने कैप को नीचा कर लिया और इंजन के दूसरी ओर झुक गया।

'यही है वह व्यक्ति!' मुन्ना फुसफुसाया।

'हमें इस पर नजर रखनी चाहिए।' मनोज बोला।

तभी उस व्यक्ति ने तेजी से बच्चों की ओर देखा। स्काउटिंग स्क्वैड के सदस्य सावधानी से घूमे और दूसरी पटरी पर पहुंच गए।

अचानक गोदाम के पीछे से तेज सीटी की आवाज आई। दूसरी कार में से एक लंबतड़ंग व्यक्ति निकला। उसके हाथों में कागजों से लिपटी कोई वस्तु थी। अपने ओवरकोट से उसे छिपाने का प्रयत्न करता हुआ वह व्यक्ति तेजी से गोदाम में घुस गया।

'मैं दावे के साथ कहता हूं कि वह बाबा की कुर्सी ही थी।' मुन्ना ने कहा—'हमें शीघ्रता करनी चाहिए।'

गोदाम में से अब पटका-पटकी की जोरदार आवाजें आ रही थीं। ऐसा लगता था मानो कोई किसी वस्तु पर हथौड़े बरसा रहा
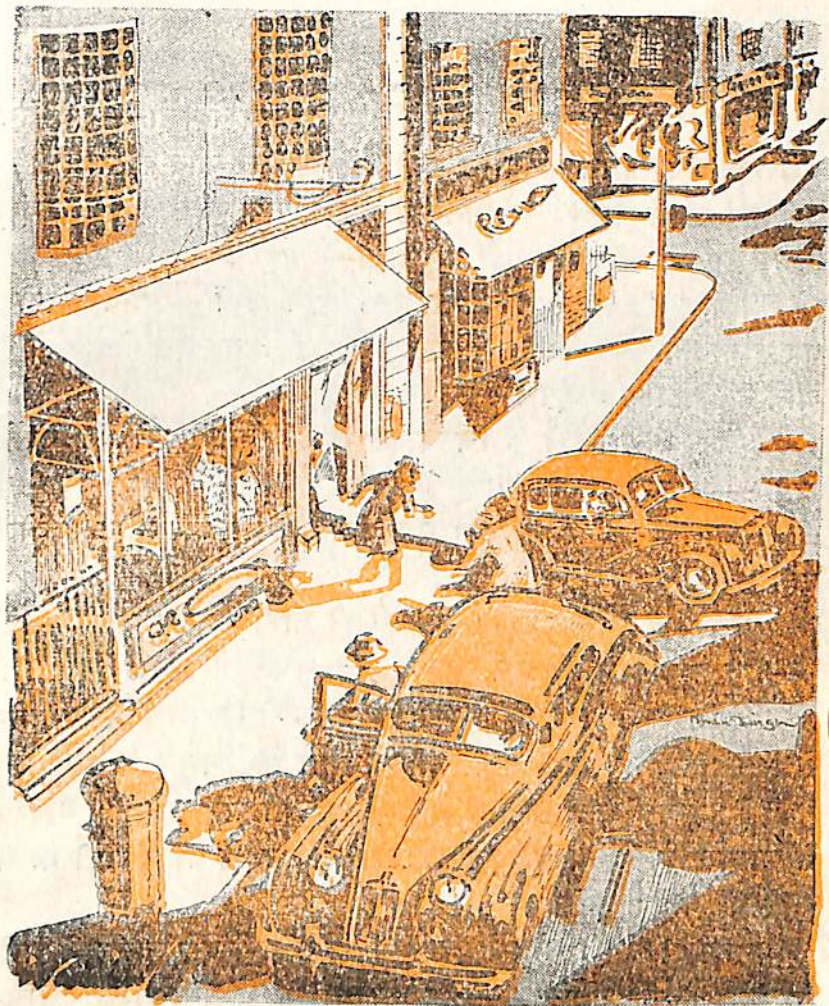
हो। अचानक गोदाम की दूसरी मंजिल पर बनी खिड़की का शीशा टूटा। उसमें से कुर्सी के हत्थे जैसी कोई वस्तु आकाश में उछली और लोप हो गई।

'हमारा चोर इसी गोदाम में हैं।' मिलिन्द ने कहा--'तुम सब यहीं रुक कर गोदाम पर दृष्टि रखो। मैं 100 पर फोन करता हूं।'

वह भागा-भागा 'सार्वजनिक टैलीफोन' तक पहुंचा। 100 डायल किया। दूसरी ओर से किसी ने पुकारा--'कहो!'

'सुनिए।' मिलिन्द घबराता हुआ कहने लगा--'गोविन्द स्ट्रीट पर बाबा की कुर्सियों का चोर उपस्थित है। वह एक गोदाम में है और वह गोदाम काहनचन्द सर्राफ का है और--'

'धीरे धीरे बोलो। चिल्लाओ मत।' दूसरी ओर से उत्तर आया--'तुम्हारा नाम क्या है?'

'मिलिन्द!' मिलिन्द धीरे से बोला--'मैं गोविन्द स्ट्रीट से बोल रहा हूं।'

एक क्षण पश्चात् उधर से किसी की भारी भरकम आवाज आई--'हम वहां दो मिनिट में पहुंचते हैं। सूचना के लिए धन्यवाद।'

मिलिन्द ने सन्तोष की सांस लेकर रिसीवर रख दिया और तेजी से उस ओर भागा जहां मनोज, मुन्ना और मंजू खड़े थे।

किन्तु वहां उन तीनों में से किसी का भी पता न था। गोदाम से आवाजें आनी बंद हो गई थीं और गोदाम के बाहर खड़ी नीली कारें भी वहां न थीं।

गांधी चौक की ओर से उसने पुलिस से भरी एक लारी को आते हुए देखा। काहनचन्द सर्राफ के गोदाम के सामने आकर पुलिस-वैन रुक गई। तेजी के साथ उसमें से कई सिपाही निकल कर गोदाम

में घुस गए ।

मनोज, मुन्ना श्रौर मंजू एक ट्रक के अन्दर छिपे छिपे यह सारा दृश्य देख रहे थे । पुलिस को देखकर वे भी बाहर कूद पड़े । मिलिन्द ने उनको देखा और मुसकरा दिया ।

गोदाम के अन्दर से चार सिपाही दो व्यक्तियों को पकड़ कर बाहर लाए । चांदी की कुछ छड़ें भी उनके साथ थीं । पकड़े गए व्यक्ति दुबले पतले थे । उन्होंने फटे कपड़े पहने हुए थे । उन दोनों को पुलिस ने वैन में धकेल दिया ।

एक दुबला पतला व्यक्ति लम्बे-लम्बे कदम उठाता हुआ स्काउटिंग स्क्वैड के पास पहुंचा । वह इन्सपैक्टर था । चारों बच्चों ने उसे प्रणाम किया । प्रणाम का उत्तर देकर इन्सपैक्टर बोला––'शाबास मेरे शेरो ! बहुत अच्छे ! किन्तु ये लोग तो यहीं के नौकर हैं । क्या तुमने किसी को गोदाम के अन्दर कुछ ले जाते हुए नहीं देखा ?'

'हां, देखा था ।' मनोज एकदम बोल पड़ा––'दो कारें गोदाम के बाहर खड़ी थीं । उनमें से एक कार से एक व्यक्ति कुछ निकाल कर अन्दर ले गया था ।'

'क्या चीज थी वह ?' इन्सपैक्टर ने पूछा ।

'उस पर कागज लिपटा था ।' मिलिन्द बोला ।

'ओह,' इन्सपैक्टर ने कहा––'कार का नम्बर क्या था ? उसका रंग कैसा था ?'

'नम्बर ?' चारों बच्चे एक साथ बोले––'नम्बर तो हमने देखा ही नहीं ।'

'और रंग ?' संजय ने पूछा ।

'वह काले रंग की थी ।' मंजू कुछ गड़बड़ा कर बोली ।

'नहीं।' मुन्ना बोला--'जहां तक मुझे ध्यान है, वह हरे रंग की थी।'

'क्या तुमको पूरा विश्वास है कि कार हरे रंग की थी ?' इन्सपैक्टर ने नोट-बुक निकाल कर पूछा।

'नहीं।' मुन्ना ने सिर हिलाया--'मैं यूं ही कह रहा हूं।'

इन्सपैक्टर ने मिलिन्द की ओर देखा। मिलिन्द बोला--'मेरा विचार है कि कार नीले रंग की एम्बैसेडर कार थी।'

इन्सपैक्टर बच्चों की ये अटपटी बातें सुनकर हंसने लगा, बोला--'ठीक है, वह कार एम्बैसेडर थी और एक साथ काली, नीली और हरी थी। हमारे जवान इन तीनों रंगों की एम्बैसेडर कारों पर निगाह रखेंगे। अच्छा, कोई व्यक्ति भी था कार में ?'

'हां, हां था।' मिलिन्द बोला।

'उसका हुलिया ?' संजय ने पूछा।

'वह काला ओवरकोट पहने हुए था।' मंजू बोली।

'लेकिन ओवरकोट काले ही होते हैं और आजकल सर्दियों में अधिकतर व्यक्ति ओवरकोट पहनते हैं।' इन्सपैक्टर बोला--'उसकी शक्ल कैसी थी ?'

'उसकी शक्ल पर तो हमने ध्यान ही नहीं दिया।' बच्चे मरे हुए से मन से बोले।

'किन्तु वह थोड़ा गुट्टा था।' अचानक मुन्ना बोला।

'और उसकी हथेली के ऊपरी हिस्से पर एक निशान था।' मंजू ने कहा।

इन्सपैक्टर ने तेजी से पूछा--'निशान ? कैसा निशान था वह ?'

'वह निशान···ओह मुझे ध्यान नहीं रहा।' मंजू ने निराशा में

गर्दन हिलाई--'लेकिन, वह सिगरेट बाएं हाथ से पी रहा था।'

'ओह !' इन्सपैक्टर हाथ मल कर कहने लगा--'तुम लोग तनिक और ध्यान रखते तो कितना अच्छा होता। खैर, अब तुम लोग घर जाओ। मैं रात को वहां आऊंगा।'

छुट्टी पाकर चारों बच्चे हवेली की ओर लौट चले। उन सबके हृदय बुझे से थे। मुन्ना बोला--'कर ली हमने जासूसी। इन्सपैक्टर महोदय जरूर हमको गधा समझते होंगे।'

'कुसूर हमारा है भी।' मनोज बोला--'हमें हर चीज को ध्यान से देखना चाहिए था।'

'ओह, चोर हमारे हाथ में आते आते रह गया।' मिलिन्द निराशा से बोला--'बाबा जब इसे सुनेंगे तो हमें कोसेंगे।'

जब वे हवेली में पहुंचे तब रात हो गई थी और इन्सपैक्टर विचारों में खोया बगीची में टहल रहा था। बच्चों को देखकर वह मुसकराया, बोला--'मुन्ना, सुना है तुम चित्रकार भी हो ?'

'जी।' मुन्ना ने सर झुका कर उत्तर दिया।

'अच्छा, तो अपना ब्रुश और रंग का डिब्बा ले आओ और चोर का चित्र बनाओ।'

'चोर का चित्र ?' मुन्ना बुदबुदाया--'लेकिन चित्र में सिवाय ओवरकोट और फैल्ट कैप के कुछ भी नहीं होगा।'

'कोई बात नहीं, कुछ तो बनेगा।' संजय ने कहा।

मुन्ना भाग कर ब्रुश और रंग का डिब्बा उठा लिया। किन्तु उस पर 'चोर' का चित्र न बनना था और न ही वह बना सका। हार झक मार कर इन्सपैक्टर को स्काउटिंग स्क्वैड की बैठक अगले दिन के लिए स्थगित करनी पड़ी।

4. बाल की खाल

अगले दिन ठीक आठ बजे स्काउटिंग-स्क्वैड की दूसरी बैठक हुई। बच्चों के पास सिवाय इसके और कोई योजना नहीं थी कि फिर से गांधी चौक पर निगाह रखी जाय, किन्तु इन्सपैक्टर ने इस प्रस्ताव को नहीं माना, कहने लगा—'नही, नहीं। पहले तुम लोगों को यह जानना जरूरी है कि किसी चोर को पकड़ा कैसे जाता है। यदि तुमको बिना कुछ समझे बूझे चोर दोबारा मिल जाएगा तो तुम लोग उसको फिर रफूचक्कर हो जाने दोगे।'

'नहीं, अब ऐसा नही होगा।,' मुन्ना बोला—'इस बार तो मैं चोर को पकड़ ही लूंगा।'

'चोर या अपराधी को पकड़ लेने भर से काम नहीं चलता मुन्ना।' संजय बोला—'सबसे मुख्य बात है उसका पूरा हुलिया याद रखना। एक अच्छे स्काउट को अपनी आंखें सदा खुली रखनी चाहिएं। उसकी स्मरण-शक्ति बहुत तेज बनाने के लिए एक मजेदार खेल का सहारा लिया जाता है।'

'कौन सा खेल है वह?' सभी बच्चे उत्सुकतावश बोले।

'मैं दिखलाता हूं।' इन्सपैक्टर ने कहा—'मनोज, जाओ, उस दराज का सारा सामान निकाल कर ले आओ।'

मनोज दराज का सारा सामान निकाल कर ले आया।

'मुन्ना,' इन्सपैक्टर मुन्ना से बोला--'बताओ, क्या क्या सामान है ?'

'प्लास, आलपीन, होल्डर, टिकट, एक दियासलाई, एक सिक्का, एक चाकू, चाबी, कील, बटन ।'

'शाबास ।' इन्सपैक्टर ने कहा--'अब तुम लोग इन वस्तुओं को ध्यान से देखो। केवल दो मिनिट का समय है ।'

बच्चों ने दो मिनिट तक उन सब वस्तुओं को देखा । कुछ देर पश्चात इन्सपैक्टर ने उन वस्तुओं को उठा लिया । उसने बच्चों से उन सभी वस्तुओं के नाम कागज पर लिखने के लिए कहा ।

बच्चे लिखने लगे--चाकू, दियासलाई, बटन, कील और फिर उनको कुछ भी याद न आया । इन्सपैक्टर मुसकरा कर बोला--'तुम लोगों की स्मरणशक्ति काफी कमजोर है । · ·लो इन वस्तुओं को फिर से देखो ।'

वस्तुओं को कई बार देखने के पश्चात बच्चे सरलता से उनके नाम लिखने लगे । कुछ ही देर में उनको उन सभी वस्तुओं के नाम याद हो गए ।

'अब' इन्सपैक्टर ने कहा--'हमें और आगे बढ़ना चाहिए । अब तुम लोग प्रत्येक वस्तु को देखने के साथ साथ उसके विषय में कुछ सूचनाएं भी लिखो । जैसे कील है तो कौन सी धातु की बनी है, कितनी लम्बी है, गोल है या तिकोनी आदि आदि ।'

बच्चे संभल कर बैठ गए । इन्सपैक्टर ने वे सारी वस्तुएं इकट्ठी करके मेज पर डाल दीं । चारों बच्चे जासूसों की भांति उन वस्तुओं को देखने लगे ।

'ये सारी बातें तुम स्काउटिंग में भी सीखते हो ।' इन्सपैक्टर

बोला--'मनोज, बताओ। यह सिक्का किस धातु से बना है ?'

'तांबे से।' मनोज ने उत्तर दिया।

'शाबास', इन्सपैक्टर ने कहा--'इस सिक्के के बारे में तुमको कई बातें लिखनी चाहिएं। जैसे: यह किस धातु का है, किस देश का

है, किस मूल्य का है, किस सन का है।'

बच्चे ध्यान से वस्तुओं को देखते रहे और उनके बारे में लिखते रहे। ठीक पांच मिनट पश्चात् इन्सपैक्टर ने उनको रोक दिया।

सबसे सही और अधिक सूचनाएं मिलिन्द ने एकत्रित की थीं। फिर भी बच्चे इस काम में आगे बढ़े थे।

कई दिन तक इन्सपैक्टर ने उन सभी को स्मरण-शक्ति बढ़ाने के चक्कर में उलझाए रखा। यहां तक कि सारे बच्चे उकता गए। चौथे दिन मुन्ना ने इन्सपैक्टर से पूछा--'क्या आप हमें स्कूल की तरह घुट्टी ही पिलाते रहेंगे।'

'अब हम लोग काफी सीख गये हैं। हमे उस चोर को पकड़ने के लिए जाने दीजिएगा।' मिलिन्द ने शिफारिस की।

इन्सपैक्टर ने सर हिलाया--'ठीक है, आज दोपहर ही से तुम लोग अपने चोर के पीछे जा सकते हो। मैंने सुना है कि वह चौपाटी पर अक्सर घूमने जाता है।'

'ठीक है, हम चौपाटी पर रहेंगे और अवसर तलाश करेंगे।' मंजू बोली।

दोपहर के ठीक डेढ़ बजे स्काउटिंग-स्क्वैड चुस्त कपड़ों में चौपाटी की ओर बढ़ा। आज बच्चे बड़े सतर्क थे। उस दिन उनकी तनिक सी भूल ने सब कुछ चौपट कर दिया था। किन्तु आज वे कोई भी अवसर गवाना नहीं चाहते थे।

मैरीन-ड्राइव तक वे लोग लोकल ट्रेन में गए, फिर पैदल आगे बढ़े। समुद्र तट पर बिल्कुल सन्नाटा था। मछुओं की कई नौकाऐं बहुत दूर गहरे जल पर तैर रही थीं। मैरीन ड्राइव की चौड़ी सड़क पार करके स्काउटिंग स्क्वैड दो भागों में बट गया। मिलिन्द और मनोज उत्तर की ओर बढ़े। मुन्ना और मंजू दक्षिण की ओर। तय यह था कि यदि कहीं पर कोई खतरा हो तो 'स्काउट विसिल' से उसकी सूचना दी जाएगी।

कुछ दूर तक तो मुन्ना सीधे सीधे मंजू के साथ चलता रहा, किन्तु जैसे ही मिलिन्द थोड़ी दूर पहुंचा, उसने रेत में से रंगीन सीपियां बटोरनी आरम्भ कर दीं। मंजू ने कई बार उसे झिड़का किन्तु मुन्ना न माना। धीरे धीरे शाम हो गई। झुंड के झुंड स्त्री पुरुष चौपाटी पर आने लगे। मिलिन्द मूंगफली बेचने वाले एक लड़के के पास जा बैठा। मनोज रेत उछालने लगा। अचानक उनके कानों में 'स्काउट-विसिल' की आवाज पड़ी। वे दोनों तेजी के साथ उठ कर खड़े हो गए। दूर पामोलिव रेस्टोरेंट के पास उनको मुन्ना खड़ा हुआ दिखाई दिया। वह बेहद घबराया हुआ सा लगता था। तभी मंजू दौड़ती हुई वहां आई। जल्दी जल्दी मंजू से उसने कुछ कहा। फिर वे दोनों रेस्टोरेंट के पिछवाड़े बने एक गलियारे में घुस गए।

मामला संगीन था। मिलिन्द ने एक पल की भी देर न की। मनोज को साथ आने का इशारा करके वह उधर दौड़ पड़ा। गलियारा बहुत तंग था। अंधेरा भी उसमें बहुत था किन्तु एक योग्य स्काउट की भांति चौकन्ने बने वे दोनों आगे बढ़ते चले गए। गलियारे के मोड़ पर उनको मंजू और मुन्ना परेशानी में सर हिलाते हुए मिले।

'क्या वह पकड़ा गया?' मिलिन्द ने जाते ही मुन्ना से पूछा।

'नहीं।' मुन्ना बोला—'यहां आकर वह व्यक्ति न जाने कहां अर्न्तध्यान हो गया।'

'क्या तुमने उसको पूरी तरह देख लिया है?' मनोज ने पूछा।

'नहीं। मैंने केवल उसकी पीठ देखी थी।' मुन्ना ने दुख भरे शब्दों में कहा।

अचानक उनकी दृष्टि गलियारे में पड़ी एक फैल्ट कैप पर पड़ी।

'हो न हो, यह कैप उसी की है।' मिलिन्द बोला।

'ग्रोह, इस कैप से क्या होता है···इससे वह चोर तो पकड़ा नहीं जा सकता।' मुन्ना ने कैप को ठोकर मारते हुए कहा।

सभी ने 'हां' में सर हिलाया। दोबारा हाथ ग्राए शिकार को भागा जान कर बच्चे बड़े दुखी हो रहे थे। शाम को उन्होंने सारी घटना इन्सपैक्टर को सुनाई तो वह बोला––'कहां है वह फैल्ट कैप ?'

'वह तो हमने वहीं पड़ी रहने दी।' मिलिन्द बोला––'भला उस कैप से हो भी क्या सकता था।'

'क्यों नहीं हो सकता था ?' इन्सपैक्टर बोला––'तुम लोगों ने उसको व्यर्थ समझ कर दूसरी गलती की है। एक ग्रच्छा गुप्तचर ग्रप-राधी की किसी भी वस्तु को व्यर्थ नहीं समझता। उस कैप से पुलिस को नौ लाभदायक बातों का सूराग लगा है।'

'कैसे ?' सारे बच्चे ग्राश्चर्य से चिल्लाए।

'बाल की खाल निकालने से।' इन्सपैक्टर बोला––'हम ग्रपराधी की किसी भी वस्तु को व्यर्थ नहीं समझते। हमारी प्रयोगशाला में प्रत्येक वस्तु की पूरी जांच होती है। इस काम पर बड़े ग्रनुभवी ग्रपराध-विशेषज्ञ नियुक्त होते हैं।

वह कैप तुम्हारे जाने के बाद पुलिस का ग्रादमी उठा लाया था। ग्रब सुनो, उस कैप से हमारे हाथ क्या क्या लगा है।

नम्बर एक : उस चोर के सर का नाप 21 इंच है, जो साधारण व्यक्ति का होता है। नम्बर दो : सर के नाप से पता चला कि उसका कद पांच ग्रौर छः फीट के बीच में है। नम्बर तीन : उस कैप में से कई काले बाल मिले हैं। इससे पता चलता है कि उसके

कैंप में मिले बाल का विश्लेषण हो रहा है
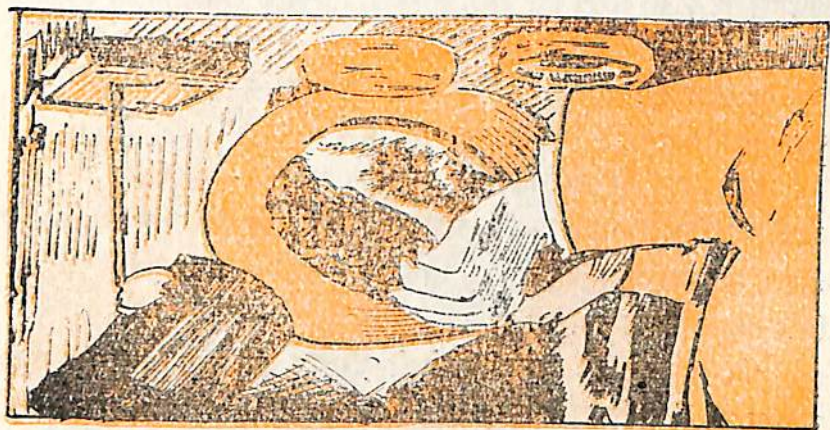
फैल्ट कैंप के विषय में पूरी जांच हो रही है

बाल काले हैं। नम्बर चार : उसकी कैप की गन्ध से पता चला कि वह एक विशेष प्रकार का तेल सिर में लगाता है। नम्बर पांच : उसकी आयु 15 वर्ष से उपर है। वह युवक है क्योंकि उसके बालों का व्यास ·07 मिलीमीटर है। बालों का व्यास आयु के साथ बढ़ता है। नम्बर छ: उसने पिछले 24 घन्टों में हजामत बनवाई थी क्योंकि उसके बालों के सिरे तेज थे। नम्बर सात: उसकी कैप में उल्टी ओर खून के धब्बे हैं। इससे पता चलता है कि उसके उल्टे हाथ के अंगूठे में पिछले दिनों चोट लगी थी। साथ ही उसका खून भी टेस्ट किया गया। वह A. B. किस्म का है। ऐसा खून किसी किसी में पाया जाता है। नम्बर आठ: उसकी कैप का वायां कोना कुछ झुका है। इससे पता चलता है कि वह व्यक्ति खब्बा है। नम्बर नौ: वह व्यक्ति किन्हीं गीली दीवारों के पास से गुजरा था, क्योंकि उसकी कैप पर गीले प्लास्तर की हल्की रगड़ पाई गई है।'

'कमाल है।' बच्चे चिल्लाए—'एक कैप से इतनी बातों का पता लगाना सचमुच कमाल की बात है।'

'तुम लोग तो स्काउट हो', इन्स्पैक्टर बोला—'तुमको तो इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। खैर अब यदि हम उस गीली दीवार का पता लगा लें, जहां से होकर वह व्यक्ति आया था, तो हम नि:सन्देह उसे पकड़ सकेंगे।'

'किन्तु इतने बड़े बम्बई में ऐसी दीवार का पता लगाना क्या सम्भव है ?' मिलिन्द ने कहा।

'जो बच्चे बहादुर होते हैं, वे ऐसे प्रश्न नहीं पूछते।' इन्सपैक्टर बोला—'वे किसी भी काम को असम्भव नहीं मानते। गीली दीवारें केवल उस तहखाने की हो सकती हैं जो पानी के पास हो। वह व्यक्ति

अपराध विशेषज्ञ अपराधी की प्रत्येक वस्तु की पूरी छानबीन करते हैं।

गलियारे के पास गायब हुआ था। गलियारा समुद्र के पास है। अतः वह गीली दीवार भी वहीं कहीं होनी चाहिए।'

बच्चों ने प्रसन्न होकर तालियां बजाईं। वे लोग घटना-स्थल पर फिर उसी समय जाना चाहते थे, किन्तु रात हो गई थी, अतः इन्सपैक्टर ने उनसे अगले दिन जाने को कहा। एक दूसरे को नमस्कार करके बच्चे उस दिन हवेली ही में सो गए।

5. मौत के मुंह में

अगले दिन बच्चे बहुत जल्दी सो कर उठे। उनको अपने नए अभियान पर जाना था। इन्सपैक्टर उस दिन मुंह अंधेरे ही कहीं चला गया था। सवा आठ बजे तक स्काउटिंग स्क्वैड के सभी सदस्य स्काउटिंग के सामान से लैस होकर चौपाटी पर जा पहुंचे। उनके पास दो मजबूत रस्सियां, एक टार्च, दो चाकू, अमृतांजन की एक शीशी और बड़े रूमाल थे।

वे चारों अलग-अलग पामोलिव रैस्टोरेंट पर पहुंचे। फिर वहां से लम्बा चक्कर काटकर समुद्र तट की ओर निकल गए। वह इलाका बिल्कुल सुनसान था। फिर भी बच्चों को ऐसा लगा जैसे कई निगाहें उनका पीछा कर रही हैं। रैस्टोरेंट के समुद्र की ओर वाले सिरे पर तीन-चार कच्ची झौंपड़ियां थीं। मुन्ना ने उनमें झांक कर देखा। तीन झौंपड़ियां एकदम खाली थीं। चौथी में एक गधा पड़ा हुआ सो रहा था।

'यहां कुछ भी नहीं है।' वह फुसफुसाया—'हम शायद गलत स्थान पर टक्कर मार रहे हैं।'

'हां, यहां तहखाना भला कैसे हो सकता है?' मनोज बोला।

'हो क्यों नहीं सकता!' मिलिन्द ने कहा—'क्या रैस्टोरेंट में नहीं हो सकता?'
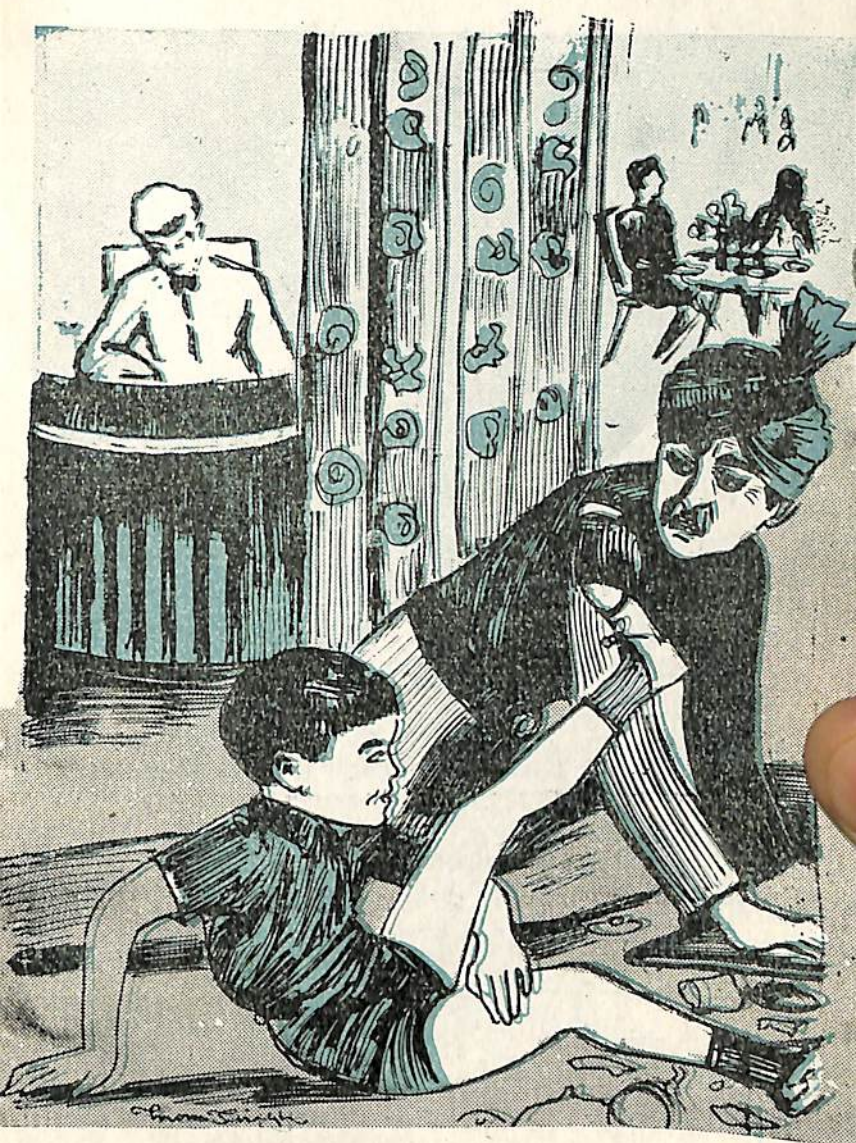
इस नई सूझ-बूझ ने चारों बच्चों को एक नई दिशा दी। सचमुच रैस्टोरेंट में तहखाने होंगे। किन्तु सवाल था कि रैस्टोरेंट के उन तहखानों तक पहुंचा कैसे जाए ?

'एक उपाय है।' मंजू बोली--'हम रैस्टोरेंट के मालिक से जाकर कहें कि हमें एक अपराधी की तलाश है। हमें सन्देह है कि वह आपके रैस्टोरेंट के तहखानों में छिपा है।'

'नहीं, नहीं।' मिलिन्द ने कहा--'यदि रैस्टोरेंट में तहखाने नहीं हुए तो वह हमें एकदम गधा समझेगा।'

'फिर ?'

'हमें चुपचाप घुसना होगा और तहखाने की खोज करनी होगी।' मिलिन्द निर्णयात्मक स्वर में बोला।

अचानक एक झोंपड़ी में से तेज आवाज आई। ऐसा लगा जैसे कोई भारी चीज फर्श पर गिरी हो। बच्चे चौकन्ने हो गए। वे दबे पांव झोंपड़ी की ओर बढ़े ही थे कि उसमें से एक गधा निकल कर तेजी से बाहर आया और रेंकता हुआ समुद्र की ओर चला गया। बच्चों ने देखा कि उसकी एक टांग जख्मी है।

फिर वे झोंपड़ी की ओर बढ़े। झोंपड़ी अन्दर से एकदम खाली थी।

'धत्त तेरे की।' मुन्ना बोला--'वह गधा ही यहां फिसलकर गिरा होगा।'

उस समय तक लगभग नौ बज चुके थे। अधिक देर करना अच्छा न जान कर वे सब पिछवाड़े की नीची दीवार लांघ कर पामोलिव रैस्टोरेंट में घुस गए।

रैस्टोरेंट अन्दर से काफी बड़ा था। जिस समय स्क्वैड

के सदस्य रैस्टोरेंट में घुसे, बहुत से व्यक्ति लान में बैठे सवेरे की चाय पी रहे थे। बच्चों से किसी ने कुछ न कहा। वे चारों ओर सतर्कता से देखते हुए डाइनिंग हाल की ओर बढ़े।

बस, यहीं एक काम खराब हो गया। गैलरी में जाते समय मुन्ना एक बेयरे से टकरा गया। बेयरे के हाथ में लगी चाय की ट्रे मुन्ना पर जा पड़ी। बस, बात बढ़ गई। बेयरे ने गाली दी तो चारों बच्चे उसे मारने लगे। बेयरा शोर मचाने लगा—'मार डाला, बचाओ, बचाओ।'

बाहर से कई बेयरे डाइनिंग हाल की ओर दौड़े। एक साथ बहुत-से व्यक्तियों के दौड़कर आने की आवाज सुनकर बच्चों ने बेयरे को छोड़ दिया और बचाव के लिए एक ओर को भाग पड़े। अब आगे-आगे स्काउटिंग स्क्वैड के सदस्य थे और पीछे-पीछे डंडे उठाए बेयरे।

अजीब मुसीबत थी। बच्चे जानते थे कि यदि वे बेयरों के हाथों में पड़ गए तो खैर नहीं है। अतः वे भागते-भागते बाहर लान के एक कौने में बनी छोटी-सी कोठरी में घुस गए।

वह कोठरी क्या थी, पूरा खंडहर थी। उन्होंने मलवे के एक ढेर से होकर दीवार फांदने की कोशिश की। अचानक मंजू की निगाह दीवार के तल पर बनी एक छोटी सी खिड़की पर पड़ी।

'वह क्या ? वह क्या ?' वह फुसफुसाई।

बच्चों ने देखा--वह सचमुच खिड़की थी। मिलिन्द ने धक्का देकर उसे खोल दिया। सीली हवा का एक बदबूदार झोंका अन्दर से आया। बच्चों ने अपने चेहरे रूमालों से ढक लिए।

'यह अवश्य वही तहखाना है, जिसकी हमें तलाश थी।' मुन्ना

बोला।

मनोज ने अन्दर टार्च की रोशनी फेंकी। नीचे तक सीढ़ियां गई थीं। तहखाने की दीवारें गीली थीं और उन पर से प्लास्तर उखड़ रहा था।

'हम अपराधी को अवश्य पकड़ लेंगे।' मिलिन्द बोला—'हमें नीचे उतरना चाहिए।'

पीछा करने वाले बेयरे अब शान्त हो चुके थे। अतः बच्चे चुप-चाप उस तहखाने में उतर गए।

अन्दर घुप अन्धेरा था। शीघ्र ही उनकी आंखें अंधेरे की अभ्यस्त हो गईं। उनको पास की वस्तुएं लगभग साफ दिखाई देने लगीं। तह-खाना काफी बड़ा था। उसमें छोटे-छोटे काफी कमरे थे। सीलन इतनी थी कि पूछो मत। दीवारों के अलावा छत और फर्श तक से पानी फूट रहा था।

वे चारों आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ने लगे। सहसा सामने के एक छोटे कमरे से एक लम्ब-तड़ंग व्यक्ति निकल कर बाहर आया। उसने काला ओवरकोट और काली फैल्ट-कैप पहनी हुई थी।

'ठहरो।' मिलिन्द बहुत धीरे से फुसफुसाया—'हमारा अपराधी सामने खड़ा है।'

किन्तु उस व्यक्ति ने बच्चों को देख लिया था।

'तुम मच्छर मेरे पीछे क्यों लगे हो?' वह गरज कर बोला—'मेरा नाम 'डेविड' है। मेरा नाम सुनकर पुलिस तक के होश उड़ जाते हैं।'

'किन्तु हम तुमको पकड़ लेंगे।' बच्चे बोले।

डेविड जोर से हंसा। फुर्ती से उसने अपनी कमर से हंटर निकाला।

उसे हवा में घुमाया और बच्चों की ओर लपका। बच्चे इसके लिए पहले से ही तैयार थे। उन्होंने डेविड को तहखाने के इतने चक्कर खिलाए, इतने चक्कर खिलाए कि वह हांफने लगा। गुर्रा कर उसने हंटर को वापिस अपनी कमर में खौंस लिया। भारी-भारी कदम उठाता हुआ वह दीवार के पास पहुंचा और न जाने कौन सी कल घुमा कर तहखाने से बाहर भाग गया।

बच्चों ने भी उसके पीछे छलांग लगानी चाही, किन्तु खिड़की बाहर से बन्द हो चुकी थी। घबरा कर उन्होंने एक दूसरे को देखा। अब क्या होगा? क्या वे उसी तहखाने में घुट-घुट कर मर जाएंगे।

सहसा मनोज की दृष्टि तहखाने के फर्श पर पड़ी। वह बुरी तरह चीख पड़ा। सबने देखा कि सामने की दीवार में एक बड़ा छेद हो गया है। उस छेद से ढेरों पानी तहखाने में गिर रहा है।

बच्चे शोर मचा-मचा कर खिड़की खटखटाने लगे। पानी तेजी से ऊपर उठता चला आ रहा था।

6. फ्लाइंग स्क्वैड को चकमा

सहसा खिड़की एक झपाटे के साथ खुल गई। बच्चों ने देखा—बाहर इन्सपैक्टर पांच पुलिस-मैन लिए खड़ा है। उसने सहारा देकर उन चारों बच्चों को तहखाने से बाहर निकाला। बच्चे बुरी तरह बदहवास थे। तुरन्त उनको गर्म गर्म काफी पिलाई गई और कार में हवेली भेज दिया गया।

शाम को जब बच्चों की तबियत संभली तो उनके पास सबसे पहले इन्सपैक्टर पहुंचा।

'बधाई बच्चो।' वह बोला—'तुम्हारे कारण बम्बई-पुलिस एक ऐसे अपराधी को पकड़ने में सफल हो गई है जिसके पीछे वह दस वर्ष से परेशान थी।'

'क्या बाबा की कुर्सियों का चोर पकड़ा गया?' चारों बच्चे एक साथ बोले।

'पहचानने की कोशिश करो।' इन्सपैक्टर ने कहा। उसने ताली बजाई। एक सिपाही दो व्यक्तियों को पकड़े ऊपर आया। बच्चे ध्यान से उन व्यक्तियों को देखने लगे।

'नहीं।' मुन्ना ने विश्वास के साथ कहा—'ये वह नहीं हो सकते। उसका नाम डेविड है।'

'डेविड?' इन्सपैक्टर ने चौंक कर कहा—'तुम यह कैसे जानते

हो ?'

मिलिन्द ने उसको तहखाने वाली सारी घटना सुना दी। कुछ देर तक इन्सपैक्टर चुपचाप कुछ सोचता रहा, फिर बोला--'क्या तुम 'डेविड' के चेहरे का चित्र बना सकते हो ?'

'हां, हम बना सकते हैं।' बच्चों ने कहा।

इन्सपैक्टर ने उनको एक एक कागज और एक एक पेन्सिल दे दी। बच्चे सोच सोच कर डेविड के चेहरे का चित्र बनाने लगे। लगभग आध घंटे में चित्र बन कर तैयार हो गए।

'नहीं, नहीं, इनसे कुछ भी मदद नहीं मिल सकती।' इन्सपैक्टर ने उन चित्रों को देख कर कहा--'ये चारों चित्र आपस में भी नहीं मिलते हैं। तुम लोगों को तो स्कूल में चित्रकारी पढ़ाई जाती होगी। फिर भी तुम नहीं जानते कि चेहरे का चित्र किस प्रकार बनाया जाता है।'

चारों बच्चे सिर झुका कर बैठ गए।

इन्सपैक्टर बोला--'आओ, आज मैं तुमको किसी भी मनुष्य के सिर का चित्र बनाना सिखाऊं।'

चारों बच्चे उत्सुकता से इन्सपैक्टर को देखने लगे। इन्सपैक्टर ने कागज का एक टुकड़ा लिया और उस पर समान दूरी पर चार समान्तर रेखाएं खींच दीं। फिर ऊपर वाली और नीचे वाली रेखा को छूता हुआ अन्डाकार वृत्त खींचा। उस अन्डाकार वृत्त के बीच में उसने एक सरल रेखा और खींची।

'यह तुम लोग ज्यामिती की सहायता से बखूबी कर सकते हो।' वह बोला--'तुम स्कूल में ज्यामिती पढ़ते हो न ?'

सब बच्चों ने सर हिलाया।
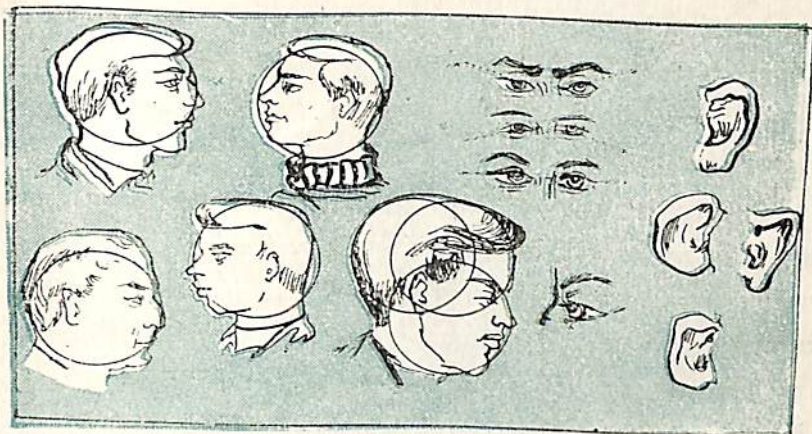
चेहरे के विभिन्न चित्र

इन्सपैक्टर ने बीच वाली रेखा खींचकर समझाया—'यह रेखा देखो। इसने इस अन्डाकार वृत्त को कई भागों में बांट दिया है। ऊपर का भाग माथा, बीच का भाग आंख और नाक और सबसे नीचे वाला भाग मुंह और टोढ़ी बनाने के लिए है।'

सब बच्चें आश्चर्य से सर के उस चित्र को देखने लगे।

'सर का चित्र बनाना कितना आसान है।' मुन्ना बोला—'हम चित्रकारी पढ़ते हैं, किन्तु हम यह तरीका नहीं जानते थे।'

कुछ अभ्यास के पश्चात प्रत्येक बच्चा सर का चित्र बनाना सीख गया। उस दिन रात गए तक वे सब अपने अपने परिचितों के चित्र बनाते रहे। एक दूसरे से पूछते रहे कि अमुक चित्र किसका है। फिर उन्होंने डेविड का चित्र बनाने की कोशिशें कीं। इसमें उन लोगों को कुछ सफलता भी मिली।

इन्सपैक्टर ने बाबा से कह कर उनको एक कैमरा भी दिलवा

दिया ताकि समय पड़ने पर वे उसका उपयोग कर सकें। उस दिन रात भर वे लोग बिस्तरों में पड़े पड़े योजनाएं बनाते रहे। सवेरा होते ही वे उठ बैठे। उनको अपने इस नए काम में इतना आनन्द आ रहा था कि वे बहुत कम सोते थे।

इन्सपैक्टर आज भी सवेरे सवेरे कहीं चला गया था। बच्चे झटपट निवटे। कैमरा मनोज ने संभाल लिया। मुन्ना अच्छा चित्रकार था। उसने कागज पेन्सिल ले ली। टार्च और रस्सियां मिलिन्द के पास थीं। इस प्रकार साज सामान से लैस होकर स्काउटिंग स्क्वैड ने चौपाटी की ओर कूच कर दिया। उनका विचार था कि अपराधी हो न हो, वहीं पकड़ा जाएगा।

ठीक दस बजे वे मैरीन ड्राइव पहुंच गए। आज वे अधिक सतर्क थे। डेविड से उनका मुकाबला हो चुका था। वे अभी स्टेशन से उतर कर लगभग बीस कदम दूर ही गए होंगे कि मुन्ना ने उनको रोका—'ठहरो, ठहरो।'

'क्या है ?'

'उस व्यक्ति को देखो, जो खंबे के सहारे खड़ा है।'

बच्चों ने देखा, खंबे के सहारे काला ओवरकोट पहने एक लंबतड़ंग व्यक्ति खड़ा था। उसके दोनों कान कालरों से ढके थे। सर पर फैल्ट कैप थी। जैसे ही उसने बच्चों को देखा, वह तेजी के साथ पीछे घूम गया और दीवार पर चिपके पोस्टर पढ़ने लगा। बच्चे सतर्क हो गए।

'मूर्ख मत बनो।' मिलिन्द बोला—'यह डेविड कभी भी नहीं हो सकता।'

'कैसे नहीं हो सकता ?' मनोज बोला—'हमें अच्छे स्काउट होने

के नाते इसकी जांच करनी चाहिए ।'

तब तक वह व्यक्ति पटरी से हटकर बस-स्टेंड पर आकर खड़ा हो गया था । बच्चों को अपनी ओर देखता हुआ पाकर उसने जल्दी से एक अखबार खरीदा और उसे इस प्रकार ऊंचा करके पढ़ने लगा कि उसका चेहरा ढक गया ।

'मुझे पक्का विश्वास है कि दाल में कुछ काला है ।' मंजू बोली ।

'हां, अब मुझे भी कुछ ऐसा ही लग रहा है ।' मिलिन्द ने कहा—'हमें इसकी जांच करनी ही चाहिए ।'

'क्या मैं इसका फोटो ले लूं ?' मनोज ने कहा ।

'लेकिन, जब तक यह अपने सामने से अखबार नहीं हटाता, फोटो लेने से लाभ ही क्या ?'

'एक उपाय है ।' सहसा मिलिन्द बोला ।

'क्या ?' सब पूछने लगे ।

'वह यह कि हम सब उसके आस पास जा कर खड़े हो जाएं । मैं उससे समय पूछूंगा । जैसे ही वह समय बताने के लिए अपने सामने से अखबार हटाएगा, मनोज तुरन्त उसकी फोटो ले लेगा ।'

योजना मजेदार थी । चारों बच्चे मासूम बने उस व्यक्ति की ओर चल दिए ।

'क्या आप समय बता सकेंगे ?' मिलिन्द ने उस व्यक्ति को सम्बोधित किया ।

मुन्ना ने जेब से कागज पेन्सिल निकाल कर पोजीशन ले ली । मनोज ने अपना कैमरा तैयार कर लिया । किन्तु उस व्यक्ति ने अपने चेहरे के सामने से अखबार नहीं हटाया । बोला—'ग्यारह बजने में सत्तरह मिनिट ।'

उत्तर पाकर चारों बच्चे वहां से खिसक गए। बेचारों को उस रहस्यमय व्यक्ति की एक झलक तक न मिल सकी। गली के मोड़ पर जाकर वे फिर से योजना बनाने लगे। उनकी आंखें बराबर उसी व्यक्ति पर लगी थीं। धीरे धीरे करके दो बज गए। इस बीच में कई बसें आईं और चली गईं। वह व्यक्ति वैसे ही खड़ा अखबार पढ़ता रहा।

'मेरा विचार है, हमें 100 पर फोन कर देना चाहिए।' आखिर मनोज उकता कर बोला।

'मेरा भी यही विचार है।' मंजू ने कहा।

मुन्ना दौड़कर सार्वजनिक-टैलीफोन तक गया और 'फ्लाइंग स्क्वैड' को फोन करके लौटा तो कमाल हो गया। बस स्टेंड पर खड़ा वह व्यक्ति बच्चों की आंखों में धूल झोंक कर नौ दो ग्यारह हो चुका था।

'उफ, पुलिस वाले तो हमको गधा कहेंगे ही, इन्सपैक्टर तो हमें एकदम से गंवार समझेंगे।' मुन्ना हाथ मलते हुए बोला।

मिनिट भर बाद ही 'फ्लाइंग स्क्वैड' की गाड़ी बस-स्टेन्ड पर आकर रुकी। कई सिपाही एक साथ उसमें से बाहर कूदे। इन्सपैक्टर डंडा हिलाता हुआ बस-स्टेन्ड के चक्कर काटता रहा। फिर वे लोग हताश होकर वापिस चले गये। मारे लज्जा के बच्चे गली से बाहर निकल ही न पाए।

पुलिस के जाने के बाद मुन्ना बोला--'धिक्कार है हमारे स्काउट-पने पर, जब हम इतने लापरवाह हैं तो कौन हमें स्काउट कहेगा।'

'सुनिए।' सहसा उनके पीछे से आवाज आई। बच्चों ने पीछे घूम कर देखा तो चक्कर खा गए। उनके पीछे वही व्यक्ति खड़ा

गुर्रा रहा था, जिसने उनको पुलिस के सामने इतना जलील किया था।

'सुनो।' मनोज को कैमरा तैयार करते देख कर वह बोला—'कैमरा बंद ही रखो। आज शाम को 6 बजे हवेली पर मेरी प्रतीक्षा करना। मैं वहीं आकर तुम सब से निबटूंगा।'

इतना कह कर वह तेजी से घूमा भी न था कि मनोज ने कैमरे का खटका दबा दिया। शायद उस व्यक्ति ने मनोज की इस हरकत पर ध्यान नहीं दिया। वह कालर उठाकर एक गली में गायब हो गया।

'यह डेविड तो नहीं है।' मनोज बोला—'मैंने इसकी फोटो ले ली है।'

'बिल्कुल नहीं, यह डेविड नहीं हो सकता।' मिलिन्द ने कहा—'इसकी फोटो लेकर तुमने बहुत अच्छा किया।'

6 बजने में अभी चार घंटे शेष थे। बच्चे जल्दी से जल्दी उस व्यक्ति की फोटो को देखना चाहते थे। अतः वे वहां से सीधे एक फोटो-ग्राफर की दूकान पर पहुंचे। मुंह मांगे दामों पर उन्होंने रील धुलने को दे डाली और आतुरता से परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे। एक घंटे बाद फोटोग्राफर ने उनको निगेटिव ला कर दिया। धड़कते दिलों से बच्चों ने उसे देखा - उफ...उसमें केवल एक गधे का चित्र आया था।

'हम सचमुच इसी योग्य हैं।' मिलिन्द बोला— 'मनोज, यदि तुम पर फोटो खींचना नहीं आता तो कैमरे को दूर फेंक दो।'

बेचारे मनोज का चेहरा लाल हो गया। आह, सारा परिश्रम ही असफल गया।

वे वहां से सीधे हवेली पर पहुंच गए। शायद 6 बजे वाली

बच्चे डेविड के बारे में तरह तरह के दिमागी चित्र बना रहे थे

बात डेविड की धमकी हो—उन्होंने सोचा। यही सोच कर उन्होंने पूरी सावधानी के साथ हवेली के पहरे का प्रबन्ध कर लिया। इन्सपैक्टर संजय से भी उन्होंने फोन द्वारा कई बार सम्बन्ध स्थापित करना चाहा, किन्तु वह कहीं बाहर चला गया था और ठीक 6 बजे हवेली पर पहुंचने वाला था।

जैसे जैसे समय बीतता जाता था, बच्चों के दिल धड़कते जाते थे। यहां तक कि पौने छः बज गए। हवेली में उस दिन बाबा भी न थे। एक बार तो बच्चों के दिल में आया कि पुलिस को फोन कर दिया जाय। किन्तु दोपहर वाली हार की याद उनको बार बार ऐसा करते हुए रोकती रही।

ठीक छः बजे बच्चों ने हवेली की बाईं दीवार से सटी एक छाया

को फाटक की ओर बढ़ते हुए देखा। हवेली के तालों को उन्होंने जल्दी जल्दी जांचा। फिर वे अपना मोर्चा संभाल कर खड़े हो गए। वह छाया उसी व्यक्ति की थी, जिसको उन्होंने दोपहर बस-स्टेन्ड के पास देखा था।

जैसे ही वह व्यक्ति हवेली के फाटक को ठेलकर अन्दर आया, सामने के वृक्ष पर बैठे मनोज ने उसका फोटो ले लिया। घबरा कर उस व्यक्ति ने फैल्ट कैप से अपने चेहरे को ढांपना चाहा, किन्तु ऐसा करते समय उसकी नकली मूंछें उखड़ कर धरती पर गिर पड़ीं। वह उनको उठाने के लिए नीचे झुका ही था कि उसके बाल भी धरती पर गिर पड़े। बच्चों ने देखा—उनके सामने इन्सपैक्टर संजय खड़ा-खड़ा मुसकरा रहा है।

'इन्सपैक्टर साहेब !' बच्चे आश्चर्य से बोले—'तो यह आप थे।'

'हां,' इन्सपैक्टर ने मुसकरा कर उत्तर दिया—'मैं यह देखना चाहता था कि तुम इस मामले में कितना आगे बढ़े हो। मुझे प्रसन्नता है कि तुमने तरक्की की है।'

'कमाल है, हम तो आपको बिल्कुल भी नहीं पहचान पाए। आपके कान आज ऊपर उठे हैं। नाक टेढ़ी है। आंखें लाल हैं। दांतों का रंग भी एकदम बदला हुआ है !' मिलिन्द ने चकित होकर कहा।

'यह सब मेक-अप की करामात है।' इन्सपैक्टर ने समझा कर कहा—'जब अपराधी और पुलिस का गुप्तचर एक दूसरे को पहचानते हों, तब वे एक दूसरे से छिपने के लिए मेक-अप का सहारा लेते हैं।'

'आजकल तो भिखारी लोग भी मेक-अप का सहारा लेकर भीख मांगते हैं।' मिलिन्द बोला—'कोई अन्धा बनता है, कोई बहरा,
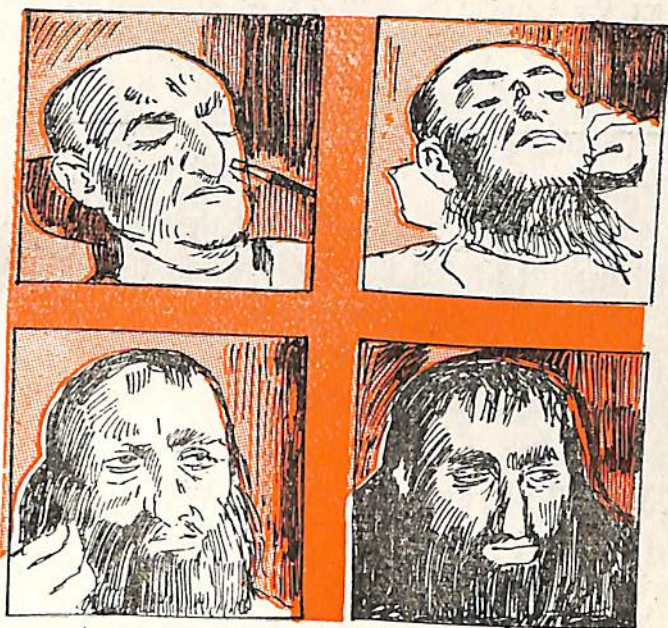
एक ही व्यक्ति को मेक अप ने चार रूप दे दिए हैं

किसी की टांग पर फोड़ा है तो किसी के पंजे ही नहीं हैं।'

'ठीक बात है।' इन्सपैक्टर कहने लगा—'किन्तु ऐसा मेक-अप सदा पकड़ा जाता है। फिर भी मेक-अप करना एक आर्ट है। प्रत्येक अच्छे स्काउट को थोड़ी बहुत यह कला आनी ही चाहिए।'

'किन्तु आपने अपने कान ऊपर को कैसे उठा रखे हैं?' मंजू ने प्रश्न किया।

इन्सपैक्टर ने मुसकरा कर कानों के पीछे रखे कागज के दो छोटे रोलर उसके सामने रख दिए—'इनको कान के पीछे लगाने से कान आगे को उठ जाते हैं। वैसे तो एक विशेष प्रकार के इन्जेक्शन से

मनुष्य का चेहरा पूरी तरह बदला जा सकता है। उस इन्जेक्शन को लगवा कर चेहरे के अंगों को जिस दिशा में मोड़ा जाता है, वे उसी दिशा में रहते हैं। आलू को मुंह में रखने से भी चेहरे फूला-फूला लगने लगता है, किन्तु एक अनुभवी गुप्तचर की दृष्टि से यह सब छिपता नहीं है।'

'फिर भी,' मिलिन्द बोला—'परेशानी तो होती ही है।'

'हां, परेशानी तो होती है।' इन्सपैक्टर बोला—'अपराधी की जांच करने का एक बढ़िया उपाय और है।'

'कौन सा है वह ?' मनोज ने पूछा।

'वह है यह।' इन्सपैक्टर ने अपनी जेब से दो कागज निकाल कर मेज पर फैला दिए।

'ये क्या हैं ?' बच्चों ने उन कागजों को विस्मय से देखते हुए पूछा।

'अंगुलियों के निशान।'

'किसके ?' मिलिन्द ने पूछा।

'ये निशान असली चोर के हैं।'

'क्या चोर पकड़ा गया ?' मनोज ने पूछा।

'नहीं।' इन्सपैक्टर कहने लगा—'ये निशान तो हमने काहनचन्द सर्राफ के गोदाम से प्राप्त किए हैं।'

'क्या ये निशान आपको वहां पड़े हुए मिले थे ?' मंजू ने भोलेपन से पूछा।

इन्सपैक्टर संजय ठहाका मार कर हंसा, बोला—'नहीं, नहीं। बात दरअसल यह हुई कि जो व्यक्ति चोरी का सामान लेकर गोदाम में घुसे थे, उन्होंने वहां के दरवाजों, कुर्सियों आदि को छुआ होगा।

अंगुलियों के निशान

इनके अलावा कार से जो पैक की हुई चीज एक व्यक्ति अन्दर ले गया था, उसकी अंगुलियों के निशान भी उस वस्तु पर बन गए थे। हमने रासायनिक विधि से अंगुलियों के उन निशानों के फोटो ले लिए।'

'लेकिन ये निशान तो मेरी अंगुलियों के निशानों से भी मिल सकते हैं।' मिलिन्द बोला।

'नहीं', इन्सपैक्टर ने उत्तर दिया—'संसार में किसी भी अंगुली के निशान किसी भी दूसरी अंगुली के निशान से नहीं मिलते। लो, मैं तुम्हें इन निशानों के बारे में पूरी बात बताता हूं।'

बच्चों ने अंगुली के निशानों के विषय में पहले कभी नहीं सुना था। अतः वे उत्सुकता से इन्सपैक्टर की ओर देखने लगे।

इन्सपैक्टर संजय ने चीनी की एक सफेद प्लेट और एक मोमबत्ती ली। मोमबत्ती को जलाकर उसने प्लेट को उसकी लौ पर रख दिया। कुछ ही देर में प्लेट पर कालिख जमा हो गई। मोमबत्ती को बुझा कर इन्सपैक्टर ने प्लेट को ठंडा कर लिया।

'मिलिन्द, यहां आओ।' उसने मिलिन्द को बुलाया। मिलिन्द से उसने प्लेट के कालिख वाले भाग पर धीरे से अंगुली रखने को कहा। मिलिन्द ने धीरे से कालिख पर अंगुली रख कर हटाई तो चकित रह गया। प्लेट पर उसकी अंगुली का साफ निशान चमक

रहा था।

'यह तो रहा मिलिन्द की अंगुली का निशान प्लेट पर, किन्तु प्लेट पर तो यह रह नहीं सकता। अतः इसको प्लास्टिक-टेप पर उतार लेते हैं।'

'किन्तु गोदाम में प्लेट कहां से आई?' मुन्ना ने प्रश्न किया।

'हां, ये दिखाई देने वाले निशान हैं। गोदाम में निशान अदृश्य थे। असल में हम लोग जब भी किसी वस्तु को छूते हैं, उस पर हमारी अंगुलियों के निशान पड़ जाते हैं।'

'मगर कैसे?' मिलिन्द ने पूछा।

इन्सपैक्टर ने उत्तर दिया—'देखो, तुम्हारी हथेली पर हजारों लाखों रेखाएं हैं। ऐसी ही रेखाएं अंगुलियों के पोरुवों पर भी हैं। इनको 'पैपिलरी' कहते हैं। इन पैपिलरियों में हर समय पसीना भरा रहता है। जब तुम किसी वस्तु को छूते हो तो यह पसीना उस वस्तु पर उतर कर तुम्हारी अंगुलियों की अदृश्य छाप बना देता है।'

'अब उन अदृश्य छापों की फोटो कैसे लेते हैं?' मिलिन्द उत्सुकता से बोला।

'मनोज, वह प्लेट तो पकड़ाओ।' संजय ने मनोज से कहा।

मनोज ने उठ कर कोने में तिपाई पर पड़ी प्लेट इन्सपैक्टर को दे दी।

'यह प्लेट बिल्कुल साफ है न?' इन्सपैक्टर ने बच्चों से पूछा।

मनोज, मुन्ना और मंजू बोले—हां, किन्तु मिलिन्द ने उठकर कहा—'जी नहीं, इस प्लेट पर मनोज की अंगुलियों के अदृश्य निशान पड़े हैं।'

'शाबास।' इन्सपैक्टर बोला। फिर उसने अपने बैग से एक
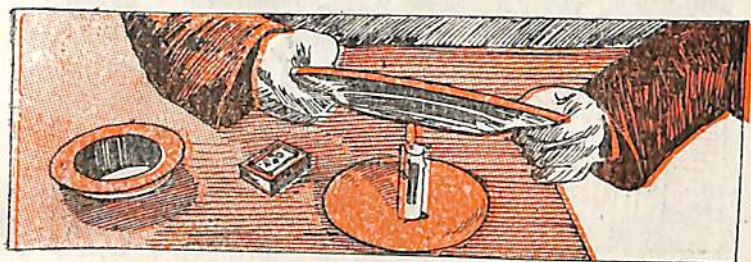
प्लेट पर अंगुलियों के निशान उतारने की विधि

प्लेट पर अंगूठे का निशान उभर आया

डिब्बा निकाला—'यह अल्यूमिनियम पाउडर है।'—वह बोला—'यह हर कैमिस्ट से मिल सकता है।'

फिर उसने बैग से नरम ब्रुश निकाला। उसमें उसने थोड़ा सा पाउडर लिया और प्लेट पर फेरने लगा। कुछ ही देर में प्लेट पर मनोज के अंगूठे का निशान उभर आया।

'कमाल है।' बच्चे चिल्लाए।

'किन्तु,' इन्सपैक्टर बोला—'तरह-तरह की वस्तुओं से निशान लेने के लिए तरह-तरह के पाउडर काम में लाए जाते हैं। जब निशान उभर जाते हैं तो उनकी फोटो ले ली जाती है। वैसे आजकल ब्रुश के स्थान पर पुलिस 'स्प्रे' से काम लेती है।'

कह कर संजय ने अपने बैग से एक स्प्रे-बोतल निकाली और किवाड़ पर स्प्रे किया। तुरन्त वहां कई निशान दिखाई देने लगे।

'ये सारे निशान तो एक से लगते हैं।' मनोज ने शंका की—'चोर की अंगुलियों के निशान हमारी अंगुलियों के निशानों से बिलकुल मिलते हैं।'

'अरे हां, सचमुच!' सब बच्चे बोले।

इन्सपैक्टर ने मुसकरा कर कहा—'तब तो पुलिस तुम सब ही को पकड़ेगी।'

'नहीं, नहीं ! हमने क्या किया है।' बच्चे सचमुच डर गए।

इन्सपैक्टर हंस कर बोला—'एक-एक रेखा को ध्यान से देखो। तुमको पता लगेगा कि किसी भी अंगुली की रेखाएं दूसरी से नहीं मिलतीं।'

बच्चों ने छाप के निशानों को ध्यान से देखा। बोले—'आप ठीक कहते हैं। प्रत्येक छाप की रेखाएं भिन्न-भिन्न हैं।'

इन्सपैक्टर संजय कुछ कहने ही जा रहा था कि पुलिस की वर्दी पहने एक व्यक्ति वहां आया। संजय को उसने फौजी ढंग से सैल्यूट दिया, फिर एक लिफाफा देकर वह चला गया। इन्सपैक्टर ने पूरी

पैरों के निशान

सावधानी के साथ वह लिफाफा खोला। लिफाफे में कुछ चित्र थे। वह ध्यान से उन चित्रों को देखने लगा।

'क्या डेविड के फोटो हैं ये ?' मनोज ने अपना कैमरा संभालते हुए पूछा।

'नहीं ।' इन्सपैक्टर बोला--'ये पैरों के निशान हैं ।'

'पैरों के निशान ?' बच्चे बोले--'भला इनसे क्या मदद मिल सकती है ?'

'बहुत मदद मिल सकती है ।' इन्सपैक्टर मुसकरा कर बोला--'ये सारे निशान उस तहखाने की खिड़की के ग्रास-पास से लिए गए हैं, जहां तुम लोगों की डेविड से भेंट हुई थी । पैरों के निशान से ग्रपराधी के बारे में बहुत सी नई बातों का पता लगा है ।'

'क्या बातें हैं वे ?' बच्चों ने ग्रपनी ग्रपनी नोट-बुक निकाल कर पूछा ।'

'पैरों के निशान के इन चित्रों को ध्यान से देखो । इन्सपैक्टर ने कहा--'चित्र सं० 1 में एड़ी के निशान काफी गहरे हैं । नम्बर दो में बाएं पैर का पूरा निशान है । एड़ी का निशान इसमें गहरा है, मगर जूता बिना एड़ी का है । तीसरा चित्र पंजे का है । उसमें जूता चौड़ी टो का है । इससे हम ये हल निकाल सकते हैं कि चोर बिना एड़ी का चौड़ी टो का जूता पहनता है ग्रौर एड़ी के बल चलता है ।'

बच्चों ने जल्दी-जल्दी ये बातें नोट कीं । उस समय तक काफी रात हो चुकी थी । बच्चों की ग्रांखों में भी नींद भर ग्राई थी । इन्सपैक्टर ने उनको बताया--'ग्रब तुम्हारे पास चोर के बारे में बहुत काफी जानकारी हो गई है । मैं चाहता हूं कि कल से तुम लोग उसे पकड़ने की पूरी कोशिश करो ।'

बच्चों ने पूरे विश्वास के साथ सर हिलाया । फिर वे लोग सोने के लिए उठ गए ।

7. अपराधी निकल भागा

अगले दिन बच्चों ने मैरीन ड्राइव के स्थान पर फ्लोरा फाउन्टेन को अपनी योजना का केन्द्र बनाया। आज वे कुछ कर डालने को सचमुच उतावले हो रहे थे। नहा धो कर वे सीधे फाउन्टेन पहुंचे और धोबी तालाब को जाने वाली सड़क पर खड़े होकर धूप सेंकने लगे।

सवेरे सवेरे हल्की बारिश हो कर चुकी थी। फुटपाथ पर आने जाने वालों के अनेकों विचित्र विचित्र पद-चिह्न बन-बिगड़ रहे थे। अचानक मुन्ना बोला—'आओ, हम इन पद-चिह्नों को पढ़ कर पता करें कि कौन सा व्यक्ति कैसा है?'

'तुम मूर्ख हो।' मिलिन्द ने उसे टोका—'हमें ऐसा करते हुए देख कर आस पास के लोग हमें घटिया किस्म के आवारा बच्चे समझेंगे।'

मुन्ना चुप होकर दूर खड़ी भूरे रंग की एक कार को देखने लगा। एक व्यक्ति जिसने काला ओवरकोट पहन रखा था, कार का बोनट खोल कर इंजन ठीक कर रहा था। सारे बच्चों ने वह दृश्य देखा।

'व्यक्ति तो डेविड जैसा ही लगता है, पर कार का रंग भूरा है।' मुन्ना बोला।

'मेरा विचार है कि यह वह व्यक्ति नहीं है, जिसकी हमें तलाश है। यह शायद कोई दूसरा ही व्यक्ति है।'

चारों बच्चे सतर्कता से उस व्यक्ति के पास जा पहुंचे।

'ओह,' मिलिन्द बोला--'यह चौड़ी टो का जूता पहने हुए है।'

'वाह, बम्बई में लाखों ऐसे व्यक्ति होंगे जो चौड़ी टो का जूता पहनते होंगे।' मुन्ना बोला--'वैसे इसके बाल काले हैं और यह काला ओवरकोट भी पहने है।'

'यह कोई बात नहीं।' मुन्ना ने उसकी बात काटी--'किन्तु इसकी कार वाकई एम्बैसेडर है।'

सहसा वह व्यक्ति खड़ा हो गया। झपाटे के साथ उसने कार का बोनट बंद कर दिया, फिर बच्चों की ओर तेज निगाहों से देख कर वह तेजी के साथ कार के अन्दर जा बैठा। जब तक बच्चे उसके पास पहुंचे, उसने कार स्टार्ट कर के एकदम तेज स्पीड पर छोड़ दी।

'आह, हम आज भी चूक गए लगते हैं।' मिलिन्द ने कहा--'वह अवश्य डेविड था।'

'वह ऐड़ियों के बल चलता था।' मुन्ना बोला।

'वह खब्बा भी था। उसने बोनट बाएं हाथ से बंद किया था।' मंजू बोली।

चारों बच्चे तेजी से उस ओर दौड़ पड़े, जिधर वह कार गई थी।

'हमें किसी भी प्रकार उसकी अंगुलियों के निशान ले लेने थे।'

वे चौराहे तक भागते हुए गए। उन्होंने देखा भूरे रंग की वह कार तेजी से एक व्यक्ति से टकराई। खून का एक फौवारा छूटा।
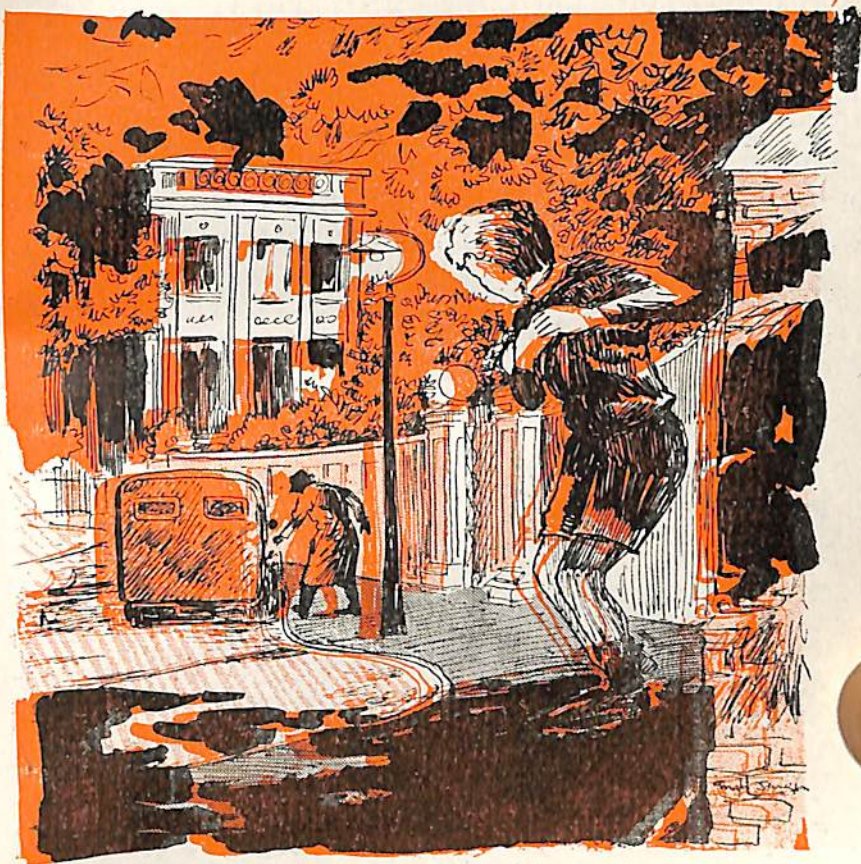
वह व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गया, किन्तु कार नहीं रुकी। वह उसी तेजी से दौड़ती रही। चौराहे पर लाल बत्ती होने के बावजूद भी कार ने उसे पार कर लिया। वहां तैनात ट्रैफिक पुलिस के सिपाही ने विसिल दी, पर कार नहीं रुकी।

'वह सचमुच चोर ही है।' मिलिन्द फुसफुसाया। चौराहे के एक ओर सार्वजनिक टैलीफोन लगा था। मनोज उसमें घुस कर 100 डायल करने लगा। पलक झपकते ही बम्बई के सारे नाके बंद कर दिए गए। सैकड़ों फ्लाइंग स्क्वैड फोर्ट एरिया में घूमने लगे।

बच्चों ने दौड़ कर चौराहा पार किया। उस घायल व्यक्ति को कुछ लोगों ने अस्पताल पहुंचा दिया था। चौराहे से कुछ दूर आगे पैट्रोल पम्प था। वहां हरे रंग की एक गाड़ी पैट्रोल ले रही थी।

मिलिन्द तेजी से उस ओर बढ़ा। गाड़ी में पैट्रोल डाला जा चुका था।

'क्या आप हमें धोबी तालाब तक गाड़ी में ले जा सकते हैं?' मिलिन्द ने ड्राइवर से पूछा—'हम चार बच्चे हैं और एक अपराधी को पकड़ने में पुलिस की सहायता कर रहे हैं।'

ड्राइवर ने घूर कर उन चारों को देखा, फिर बोला—'बैठो।'

बच्चे दौड़ कर गाड़ी में बैठ गए। ड्राइवर बड़ा चतुर निकला। कुछ ही मिनिट में वे धोबी तालाब पर पहुंच गए।

वहां पहुंच कर बच्चों ने ड्राइवर को धन्यवाद दिया। कार से उतर कर वे एक बड़ी बिल्डिग के नीचे खड़े हो गए। सहसा एक रैस्टोरेंट के सामने मुन्ना को भूरी कार खड़ी हुई दिखाई दी।

'वह कार, वह देखो।' वह फुसफुसाया।

सारे बच्चे तेजी के साथ उस कार की ओर लपके।

कार खाली थी। मिलिन्द ने रैस्टोरेंट में झांक कर देखा। एक केबिन में उसे काला ओवरकोट हिलता हुआ दिखाई दिया। मनोज, मुन्ना और मंजू को अपने पीछे पीछे आने का संकेत करके वह

केबिन तक जा पहुंचा ।

केबिन में सचमुच वही व्यक्ति बैठा भोजन कर रहा था । अप-राधी को अपने चंगुल में फंसा देख कर चारों बच्चे खुशी से नाच उठे।

मिलिन्द के कहने पर मुन्ना ने वहीं से पुलिस को फोन कर डाला । पलक झपकते ही फ्लाइंग स्क्वैड के कई दस्ते रैस्टोरेंट को घेर कर खड़े हो गए ।

मुन्ना ने इन्सपैक्टर का स्वागत किया । सारे रैस्टोरेंट में हल-चल मच गई । मैनेजर घबरा कर दौड़ा आया । मिलिन्द अभी तक केबिन पर तैनात खड़ा था । गर्व से उसका सीना फूला था । उसने आगे बढ़कर इन्सपैक्टर का स्वागत किया और केबिन का पर्दा उठा दिया ।

किन्तु आश्चर्य ! केबिन एकदम खाली था । मेज पर केवल झूठे वर्तन पड़े थे ।

'आह, वह फिर भाग गया ।' मिलिन्द की आंखें भर आईं । इन्सपैक्टर ने उसकी पीठ थपथपाई, बोला--'अच्छे बच्चे हिम्मत कभी नहीं हारते ।'

अपने सिपाहियों से सावधानी-पूर्वक वर्तन उठा लाने को कहकर वह मिलिन्द को साथ लिए बाहर चला गया ।

8. अपहरण की कोशिश

उस दिन जब चारों बच्चे हवेली पर वापिस पहुंचे तो बड़े उदास और लज्जित थे। उनकी तनिक सी ही गलती ने हाथ में आए अपराधी को एक बार और निकल भागने का अवसर दे दिया था।

शाम को इन्सपैक्टर संजय से भी वे आंखें नहीं मिला सके।

'बीती बात पर दुःख नहीं करना चाहिए।' इन्सपैक्टर ने उनको समझाते हुए कहा--'तुम लोगों ने अवश्य ही कोई काम ऐसा किया होगा, जिसकी भनक चोर के कानों में पड़ गई होगी।'

'मुझसे मिलिन्द ने पुलिस को फोन करने के लिए कहा था।' मुन्ना बोला।

'लेकिन मैं और कर भी क्या सकता था ?' मिलिन्द ने कहा-- 'मैं कैसे भी कहता, हर बात वह सुन सकता था।'

'ऐसे अवसरों पर 'गुप्त-भाषा' का प्रयोग किया जाता है।' इन्सपैक्टर ने कहा।

'कैसी गुप्त भाषा ?' मिलिन्द ने पूछा।

'गुप्त भाषा से मतलब है संकेतों से अपना मतलब समझाना। तुमने अक्सर सड़क के किनारों पर ऐसे छोटे-छोटे बोर्ड लगे देखे होंगे जो कार आदि चलाने वालों की सावधानी के लिए लगाए जाते हैं।'

'हां, हां हमने देखे हैं।' सारे बच्चे बोले।
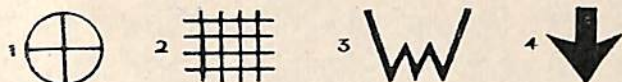
'ऐसे ही निशान किन्हीं विशेष मतलबों के लिए चुन लिए जाते हैं। जैसे ऊपर के चित्र में संख्या एक से मतलब है–घर गरीब है, नम्बर दो से मतलब है जेल की सलाखें––याने घर अच्छा नहीं है। नम्बर तीन से तात्पर्य है कुत्ते के दांत––याने सावधान और चौथे से मतलब है बदला।'

'और पुलिस…?'

'बताता हूं।' इन्सपैक्टर संजय बोला––'फ्लाइंग स्क्वैड के गुप्त संकेत अपने अलग होते हैं। इनको कोई भी नहीं समझ सकता सिवाय पुलिस के। बहुत पुराने समय में तानाजी ने शिवाजी को सिंहगढ़ के किले पर विजय की सूचना आग जला कर दी थी। आज आग का काम सर्चलाइटों अथवा तेज बैटरियों से लिया जाता है। मतलब यह कि यदि मिलिन्द को दूर खड़े मुन्ना से यह कहना है कि इस व्यक्ति का पीछा करो, तो बजाय इसके कि मिलिन्द मुन्ना के पास जाकर अपनी बात कहे, वह वहीं खड़ा खड़ा एक बार टार्च जला कर यही बात मुन्ना को समझा सकता है। टार्च के ऐसे ही संकेत भिन्न भिन्न बातों के लिए नियत किए जा सकते हैं।'

'हां, हां, हमने स्काउटिंग में यह सब सीखा है।' बच्चे बोले। इन्सपैक्टर कहने लगा––'किन्तु जब संदेश किसी को लिख कर दिया जाता है तब उसकी भाषा भी गुप्त हो सकती है।'

'कैसे ?' सब बच्चे बोले।

'वह ऐसे कि यदि तुम चाहते हो कि किसी को कुछ लिख कर

भेजो और उसे कोई पढ़ न सके तो तुम अपने शब्दों को और शब्दों के अक्षरों को उलटा लिख सकते हो। जैसे तुमको लिखना है--'इसका पीछा करो' तो इसे इस प्रकार लिखो--'रोक छापी कासइ'।

दूसरा उपाय यह है कि ध्वनि के निश्चित अक्षरों के स्थान पर दूसरे अक्षर काम में लाए जाएं। जैसे क के स्थान पर न, र के स्थान पर प, इ के स्थान पर द और प के स्थान पर त

तब होगा--'दसना रीछा नपो=इसका पीछा करो'

'इसके अतिरिक्त।' इन्सपैक्टर बोला--'गुप्त संदेश भेजने के सैकड़ों उपाय हैं।'

'नींबू के रस से लिखकर भी तो गुप्त संदेश भेजा जा सकता है।' मिलिन्द ने कहा।

'हां!' इन्सपैक्टर बोला--'नींबू के रस से लिखे अक्षर वैसे दिखाई नहीं देते, किन्तु जैसे ही उनको आग की सेंक दी जाती है, वे उभर आते हैं। लेकिन संदेश भेजने की एक बहुत ही जादू भरी विधि मैं तुमको बता रहा हूं।'

सारे बच्चे उत्सुकतावश इन्सपैक्टर को देखने लगे। इन्सपैक्टर बोला--'एक अण्डा लो। उसे दस मिनिट तक उबालो। फिर फिटकरी के चूरे और सिरके को मिलाकर उससे जो सन्देश तुम चाहो अण्डे पर लिख दो। बाहर से कुछ भी दिखाई नहीं देगा, किन्तु जो व्यक्ति उस अण्डे को छीलेगा, उसे तुम्हारा सन्देश अन्दर छपा हुआ मिलेगा।'

'क्या?' सारे बच्चे आश्चर्य से बोले।

'जी हां।' इन्सपैक्टर ने कहा--'वह व्यक्ति सन्देश पढ़ कर मजे से अण्डा खा जाएगा।'

बच्चों को यह विधि बहुत पसन्द आई। इन्सपैक्टर चुप हुआ तो वे चुपचाप गुप्त संकेतों पर चर्चा करने लगे।

अब उन्होंने अपनी बोलचाल के भी गुप्त संकेत बना लिए थे ताकि अपराधी उनकी बातें सुन कर सतर्क न हो पाए। 'फ्लाइंग स्क्वैड' को उन्होंने 'तोता' और 'फोन' को 'कनचप्पी' कहना शुरू कर दिया था। 'फ्लाइंग स्क्वैड को फोन करो' के स्थान पर 'इस तोते की कनचप्पी करो' कहना सभी को पसन्द आया।

उस समय रात के आठ बज चुके थे। बच्चों के लिए वापिस घर लौटना सम्भव न था। सर्दी बड़े जोर से पड़ रही थी, अतः वे सब हवेली ही में सोने की तैयारियां करने लगे। सोने से पहले वे सब जरा घूमना चाहते थे, किन्तु इन्सपैक्टर ने उनको अब कहीं न जाने का परामर्श दिया।

फिर भी मनोज दबे कदमों से दरवाजे तक गया। वह थोड़ी देर जरूर घूमना चाहता था। धीरे से उसने संकल खोली। बाहर झांककर देखा। सारी गली में एकदम सन्नाटा था। अन्तिम लैंप-पोस्ट की रोशनी धीमी पड़ रही थी। सामने की बिल्डिंग के पास एक कुत्ता कूं-कूं करता हुआ किसी आरामदायक स्थान की तलाश कर रहा था।

गली के मोड़ पर एकाएक उसे उस रहस्यमय व्यक्ति की झलक दिखाई दी, जिसके पीछे वे अपना खाना-पीना तक भूल गए थे। काले ओवरकोट और फैल्ट कैप में वह व्यक्ति धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ लैंप-पोस्ट तक आया। ओवरकोट की जेब से उसने कागज का एक पुर्जा निकाला। लैंप-पोस्ट की रोशनी में उसे पढ़ा। सिगरेट सुलगाई और बाएं हाथ से उसे पीने लगा।

मनोज खिल उठा। दरवाजा ठेलकर उसने मिलिन्द, मुन्ना और मंजू को इशारा किया। चारों दबे कदमों से गली में आए। उस समय वह व्यक्ति गली के उस पार वाली सड़क पार करके सिनेमा की ओर बढ़ रहा था। इन्सपैक्टर अपने कमरे में सोने चला गया था। उनको अब उसका भय न था।

तेज कदमों से चारों बच्चों ने गली पार की। सिनेमा में पहला शो चल रहा था। अतः भारी कोहरे के बावजूद भी वहां थोड़ी बहुत चहल-पहल थी। मोड़ पर खड़े होकर उन सब ने चारों ओर नजरें दौड़ाईं किन्तु शिकार कहीं भी दिखाई न दिया।

'हमें सिनेमा तक जाना चाहिए।' मनोज बोला--'हमने उसे सिनेमा की ओर जाते देखा है।'

सारे बच्चों ने सर हिला कर उसका समर्थन किया। सतर्क और नपे तुले कदमों से चारों ने सड़क पार की। सिनेमा के अन्दर से एक व्यक्ति बाहर आया। उसने काला ओवरकोट और फैल्ट कैप पहनी हुई थी। चारों बच्चे उसे देखकर सतर्क हो गए।

'अरे, इसके तो सफेद दाढ़ी है।' उस व्यक्ति को ध्यान से देखते हुए मिलिन्द बोला।

'हां, हां, हमने गलत व्यक्ति को शिकार बनाया है।' मुन्ना ने कहा।

मंजू बोली--'मैं इसे जानती हूं। यह मेरी सहेली नीना के पिताजी सिन्हा साहेब हैं और इस सिनेमा के मैनेजर हैं।'

चारों बच्चे हताश बने एक दूसरे को देखने लगे।

'वहां देखो, वहां देखो।' अचानक मुन्ना ने बहुत ही धीरे से कहा--'उस सामने वाली पटरी पर।'

सामने वाली पटरी पर सचमुच उनका शिकार खड़ा बाएं हाथ से सिगरेट पी रहा था ।

बच्चों में जैसे किसी ने नए प्राण फूंक दिए । वे दो टोलियों में बंट गए । मिलिन्द और मनोज, मुन्ना और मंजू । दोनों टोलियां दो दिशाओं से शिकार की ओर बढ़ीं ।

सम्भवतः उस व्यक्ति को भी बच्चों का मतलब समझ में आ गया था । उसने अपनी सिगरेट फेंक कर जूते से मसल दी और कैप को थोड़ा नीचे झुका लिया । बच्चे उसके पास जाकर खड़े हो गए ।

पांच मिनिट इसी प्रकार गुजर गए । बच्चों ने देखा—वह व्यक्ति कुछ घबराया सा लगता था ।

'इस तोते की कनचप्पी करो ।' मनोज फुसफुसा कर मिलिन्द से बोला ।

उस व्यक्ति ने तेज दृष्टि से उन दोनों की ओर देखा । सीटी बजाकर वह अपने स्थान से हिला । मिलिन्द ने सिनेमा की ओर पैर बढ़ाए ताकि वहां से वह 100 पर फोन कर सके ।

कैप को थोड़ा ऊपर करके उस व्यक्ति ने कनखियों से बच्चों की ओर देखा । अचानक वह उछला और एक झपाटे के साथ पास की संकरी गली में घुस गया ।

सिनेमा की ओर जाता मिलिन्द तेजी से लौटा । वे चारों एक साथ दौड़कर गली में घुसे, किन्तु कुछ ही दूर गए थे कि एक साथ उन चारों ने ठोकर खाई । संभलने की कोशिशों के बावजूद भी उन चारों के सर गली के पक्के फर्श से टकरा गए। चारों के सामने जैसे हजारों सितारे झिलमिला गए एक साथ ।

बच्चों के गिरते ही वह बदमाश अंधेरे से निकल कर उनके सामने आ गया।

'क्यों पीछा कर रहे थे ?' उसने भद्दी गाली देकर बच्चों से पूछा।

मिलिन्द ने देखा--उसके हाथ में एक लम्बा बांस था। वही बांस अटका कर तो उसने बच्चों को गिराया था।

यहां बच्चे फिर मात खा गए। इंसपैक्टर के अतिरिक्त उनको स्काउटिंग में भी बताया गया था कि चलते समय सदा सामने की ओर देखना चाहिए। फिर भागते समय तो इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि सामने देखकर भागा जाए। काश, बच्चे सामने देखकर भागते।

मुन्ना ने उठने का प्रयत्न किया तो उस बदमाश ने लात मार कर उसे फिर गिरा दिया।

'कौन हो तुम ?' वह कड़कदार आवाज में बोला।

बच्चे चुप रहे।

'नहीं बोलोगे ?' वह बांस को धरती पर पटक कर गुर्राया--'मरना चाहते हो ?'

'क्या आप डेविड के दल के हैं ?' सहसा मंजू ने कराहते हुए पूछा।

'डेविड ? कौन डेविड ?' बदमाश हंसकर बोला--'मुझे चलाने की कोशिश मत करो। मैं तुम लोगों को पुलिस के साथ देख चुका हूं। तुमको मेरे साथ चलना होगा।'

'कहां ?' सारे बच्चे बोले।

'मेरे अड्डे पर।' वह फटी आवाज में फिर गुर्राया--'उठो।

उठो ।'

बच्चों ने घबरा कर एक दूसरे को देखा। एक-एक बांस उनकी पीठ पर आ कर पड़ा तो वे सब उठने लगे। आह, काश वे इंसपैक्टर की बात मान कर हवेली से बाहर नहीं निकलते। किन्तु अब क्या हो ?——अब तो वे चीख भी नहीं सकते। बांस की लाठी कभी भी सर पर गिर सकती थी।

उस बदमाश ने उन चारों को बांस से आगे की ओर ढकेला। बच्चे लड़खड़ाते हुए आगे बढ़े। उनका साहस टूट चुका था। उनकी आंखों में आंसू भर आए थे।

अचानक गली के मोड़ पर पिस्तौल का धमाका हुआ। उस बदमाश ने घबरा कर पीछे की ओर देखा। गली में दो व्यक्ति तेजी से उसी ओर दौड़े चले आ रहे थे। उनमें से एक के हाथ में पिस्तौल थी। दूसरे के हाथ में लाठी।

बदमाश ने घबराकर बांस फेंक दिया। उछलकर वह भागना ही चाहता था कि चारों बच्चे उससे चिपट गए। पल-भर ही में वह काबू में आ गया।

बच्चों ने देखा, गली की ओर से आने वालों में एक थे इन्सपैक्टर और दूसरे थे बाबा।

'तुमने तो हमारा दम ही निकाल दिया।' इन्सपैक्टर शिकायत भरे स्वरों में बोला——'मैंने तुमसे बाहर निकलने को मना किया था, किन्तु तुम लोग माने नहीं। यदि हम लोग समय पर न आते, और मिस्टर सिन्हा हमें तुम्हारा पता न बताते तो सोचो क्या होता ?'

सारे बच्चे सर झुका कर खड़े हो गए।

'अच्छे बच्चे अपने बड़ों की आज्ञा मानते हैं।' बाबा बोले—'जब-जब भी छोटों ने बड़ों की बात नहीं मानी, तब-तब उन्होंने नुकसान उठाया है।'

'हमें क्षमा कर दीजिए।' बच्चों ने कहा—'भविष्य में हम सदा आपकी बात मानेंगे।'

वे लोग गली से निकले ही थे कि उनके सामने 'फ्लाइंग स्क्वैड' की गाड़ी रुकी।

'हलो इन्सपैक्टर !' उसमें बैठा एक व्यक्ति बोला—'खैरियत तो है।'

'हां', इन्सपैक्टर ने मुसकरा कर उत्तर दिया—'हमारे स्काउटिंग स्क्वैड ने शिकार खेला है।'

'कहां है वह शिकार ?'

इंसपैक्टर ने उस बदमाश की ओर संकेत किया।

'ओह रमजान जेबकतरा !...सवेरे ही तो यह जेल से छूटा है।' फ्लाइंग-स्क्वैड अधिकारी ने दांत किटकिटाते हुए कहा।

रमजान चुपचाप गाड़ी में आकर बैठ गया। शिकार पकड़ा गया था—इस भावना से बच्चे सारे दर्द भूल गए थे। हवेली पर पहुंच कर बाबा ने बच्चों की चोटों पर मरहम लगाया। फिर उनको चुपचाप सोने का निर्देश देकर वह अपने कमरे में चला गया। उसके जाने के पश्चात् भी बच्चे काफी देर तक बातें करते रहे। उन्हें दुःख था कि उनका शिकार एक जेबकतरा ही बना। काश, वह 'डेविड' होता।

फिर भी उस रात उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब वे उस चोर को पकड़ कर ही रहेंगे, जिसने पिछले एक माह से उनका नाक में दम कर रखा है।

9. अपराधी पकड़ा गया

अगले दिन बच्चे जब सोकर उठे, तो उनके सामने समस्या थी कि किधर चला जाए। सच तो यह था कि बम्बई जैसे विशाल प्रदेश में किसी एक विशेष अपराधी को पकड़ना अवसर ही की बात हो सकती थी।

'आज हमें काहनचन्द सर्राफ से निबटना चाहिए।' मिलिन्द ने कहा—'वह उस अपराधी को अवश्य जानता होगा।'

'यह बात तो हमें अभी तक नहीं सूझी।' मुन्ना बोला—'जबकि हमें सबसे पहले काहनचन्द ही के पास जाना चाहिए था।'

बच्चों को अफसोस हुआ कि इससे पहले उन्होंने काहनचन्द से इस मामले पर बातें नहीं कीं। असल में वे स्काउट थे, जासूस तो थे नहीं। मुन्ना ने एक टैक्सी रुकवाई। बच्चे सतर्कता से चारों ओर देखते हुए उसमें जा बैठे। गांधी चौक से काफी पहले ही वे लोग उतर पड़ें और थोड़े थोड़े अन्तर से काहनचन्द सर्राफ की दूकान की ओर चल पड़े।

इस बार वे कई नई वस्तुएं भी अपने साथ लाए थे। मुन्ना के पास मजबूत नायलन की रस्सी के अलावा लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा था। उस टुकड़े पर पूरी लम्बाई की दो नुकीली कीलें जड़ी थीं। मिलिन्द के पास एक नकली पिस्तौल था।

गांधी चौक की चौड़ी सड़क पार करके वे गोविन्द स्ट्रीट की ओर मुड़े ही थे कि उनको चबूतरे के सिरे पर एक विचित्र व्यक्ति दिखाई दिया। उसके सर पर फैल्ट कैप थी। उसने लम्बा काला ओवर

कोट पहना हुआ था। उसके जूते बिना ऐड़ी के थे और वह बाएं हाथ से एक छोटी सी छड़ी घुमाता हुआ नुक्कड़ वाले पनवाड़ी से बातें कर रहा था।

उसे देखते ही चारों बच्चों के चेहरे चमक उठे।

'वह निश्चय ही हमारा शिकार है।' मिलिन्द बोला—'हम उस पर निगाह रखते हैं, मुन्ना तुम तुरन्त 100 को फोन कर दो।'

तभी चबूतरे के उस पार से एक सिपाही डंडा घुमाता हुआ वहां आया। पनवाड़ी की दूकान पर ठहर कर उसने उस रहस्यमय व्यक्ति

से दियासलाई मांगीं और बदले में उसे कागज का एक पुर्जा थमा कर वह गली में घुस गया।

'ओह, वह बदमाश सिपाही! हमें उसे भी देखना होगा।' मिलिन्द फुसफुसाया--'वह निःसन्देह उससे मिला है।'

'किन्तु', मुन्ना बोला--'पहले हमें सारे मामले की पूरी तरह जांच कर लेनी चाहिए। ऐसा न हो कि इस बार भी हमें मुंह की खानी पड़े।'

'नहीं, नहीं। तुम 100 को फोन करो।' मिलिन्द ने उसे आदेश दिया।

मुन्ना बेमन से सर हिलाता सार्वजनिक-टैलीफोन की ओर बढ़ा; फिर हाथ हिलाता वापिस आ गया। फिर वे चारों चबूतरे की ओर बढ़ चले।

वह व्यक्ति बच्चों से बेखबर बना दीवार पर चिपके पोस्टर पढ़ रहा था। बच्चे जाकर उसके तीनों ओर खड़े हो गए। योजना के अनु-सार मुन्ना ने रस्सी में स्काउटिंग में सीखी क्लबविच गांठ बांध ली। यदि चोर ने भागने की कोशिश की तो उसके गले में फन्दा डालने की योजना थी उसकी।

किन्तु न वह व्यक्ति भागा और न ही उसने पोस्टरों पर से अपनी नजरें हटाईं। वैसे ही खड़ा खड़ा वह बोला--'आज तुम लोग यहां कैसे आ गए?'

बच्चों ने आश्चर्य से एक दूसरे की ओर देखा। यह तो इन्सपैक्टर संजय की आवाज थी। मुन्ना ने तुरन्त रस्सी को जेब में छिपा लिया। मनोज ने कैमरा नीचे कर लिया।

'सम्भव हैं, चोर आज यहां आए।' उस रहस्यमय व्यक्ति ने

कहा—'तुम लोग सावधान रहना।'

सारे बच्चे चुपचाप वहां से हट गए; किन्तु वे अभी भी सन्देह में थे।

'तुमने 100 को फोन किया था ?' मिलिन्द ने मुन्ना से पूछा—'ओह, हम फिर मात खा गए।'

'घबराओ मत।' मुन्ना ने कहा—'मैंने फोन नहीं किया था।'

बच्चों के दूर होते ही वह व्यक्ति धीरे धीरे कदम बढ़ाता हुआ गोविन्द स्ट्रीट तक जा पहुंचा। वहां गली के अन्दर एक नीली फीएट खड़ी थी। वह जाकर उसके पास खड़ा हो गया।

'मुझे शक है।' मिलिन्द बोला—'यह व्यक्ति इन्सपैक्टर संजय नहीं हो सकता।'

'शक हमें भी है।' मनोज ने कहा—'मैं 100 को फोन करता हूं।'

वह अभी अपने स्थान से हिला ही था कि गली के अन्दर से एक भारी भरकम व्यक्ति एक गठरी लिए भागता हुआ आया। उसे देखकर पहले वाला व्यक्ति सर्राटे के साथ कार में बैठ गया। एक हल्की आवाज के साथ कार स्टार्ट हुई और तेजी से गांधी चौक की ओर मुड़ी।

मनोज ने सार्वजनिक-टैलीफोन की ओर छलांग लगाई। तब तक कार स्पीड पकड़ चुकी थी। मिलिन्द विवशता में हाथ मलने लगा। आह, आज फिर अपराधी हाथ में आकर निकल भागा। गांधी चौक का चौराहा पार करके वह कार अब तेजी के साथ उधर ही आ रही थी जिधर बच्चे खड़े थे।

'काश, हम पुलिस को पहले ही फोन कर पाते।' मिलिन्द दुख-

भरे स्वरों में बोला।
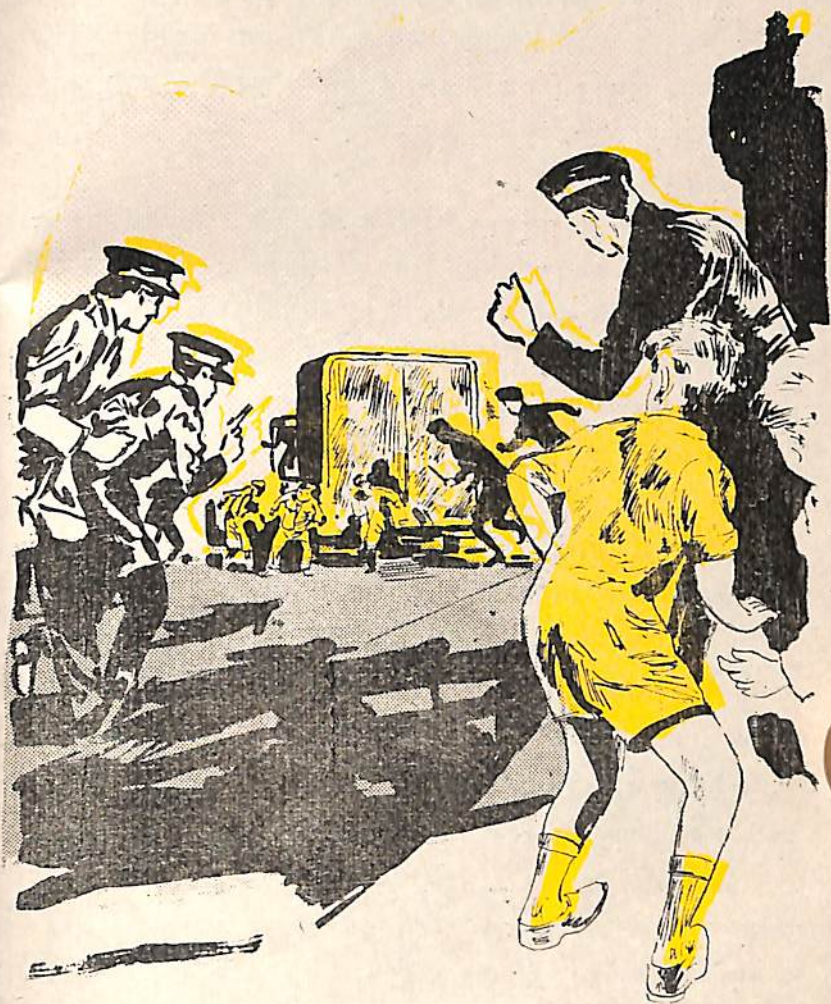
मुन्ना ने कार को पास आते देखकर अपनी जेब से चटपट लकड़ी का वह टुकड़ा निकाला, जिस पर कीलें जड़ी थीं। कार के समीप आते ही उसका हाथ उछला। लकड़ी का टुकड़ा धरती पर गिरा और कार का दायां पहिया उस पर से निकल गया।

'धूम ! धड़ाक।'

भयानक धड़ाका हुआ। लकड़ी के टुकड़े की दोनों कीलें कार के टायर में घुस गई थीं। पहिया पन्चर हो गया। कार एक तेज झटके से रुक गई। बच्चे गली की आड़ में हो गए। कार से दोनों आदमी तेजी से बाहर निकले। बिजली सी फुर्ती से उन्होंने कार का पहिया बाहर निकाल लिया, किन्तु दूसरा पहिया न चढ़ा सके।

पुलिस ने उनको चारों ओर से घेर लिया था। पुलिस को देखकर ओवरकोट वाला बदमाश उठा और गली की ओर भागा। कई सिपाही उसकी ओर दौड़े। गली के मोड़ पर खड़े मनोज ने फुरती के साथ जेब से रस्सी निकाली। उसके एक सिरे पर बो लाइन नॉट पड़ी थी। उसने उछल कर रस्सी का फंदा भागते हुए बदमाश पर फेंका। निशाना सही पड़ा। रस्सी में बंधकर बदमाश धड़ाम से धरती पर गिर पड़ा।

शीघ्र ही चार सिपाहियों ने मिल कर उन दोनों बदमाशों की मुश्कें कस दीं। चारों बच्चे भी अब आड़ में से निकल आए थे।

'मेरा नाम मनोज है।' मनोज ने अपना परिचय देते हुए पुलिस इन्सपैक्टर से कहा—'हम स्काउटिंग स्क्वैड के सदस्य हैं।'

पुलिस इन्सपैक्टर ने सब बच्चों से हाथ मिलाया। बोला—'ओह, तुम बच्चे, तुम लोगों ने तो कमाल कर दिया। जिन

अपराधियों को पुलिस वर्षों तक नहीं पकड़ सकी, उनको तुमने मिनिटों में पकड़वा दिया।'

'हम सब स्काउट हैं।' मिलिन्द ने कहा—'क्या हम जान सकते हैं कि उस गठरी में क्या है, जिसे यह व्यक्ति अन्दर से लाया था ?'

'हां, हां, क्यों नहीं,' पुलिस इन्सपैक्टर बोला। गठरी खोल कर देखी गई। उसमें बाबा की जादुई कुर्सियों के आबनूसी-हत्थे थे।

'आह,' बच्चे बोले—'तो बाबा की हवेली में डाका डालने वाले भी ये ही लोग हैं। इनको तो कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए।'

पुलिस इन्सपैक्टर ने फिर मिलने को कह कर बच्चों से बिदा ली।

बच्चे जब हवेली पर पहुंचे तो बाबा ने उनका राजाओं जैसा सम्मान किया। इन्सपैक्टर संजय को अपने 'स्काउटिंग स्क्वैड' पर गर्व था। उसे सबसे अधिक प्रसन्नता थी। उसी समारोह में बम्बई के इन्सपैक्टर जनरल आफ पुलिस ने बच्चों को पांच हजार रुपये के इनाम की भी घोषणा की जो शायद अब तक मिलिन्द, मुन्ना, मनोज और मंजू को मिल चुका होगा।

पांच प्रकार की
पत्तियों की मनमोहक एलबम बनाना

शौक तरह तरह के होते हैं। पत्तियों की मनमोहक एलबमें बनाना भी एक प्रकार का मजेदार शौक है। पत्तियों की एलबम बनाने के लिए न किसी कीमती सामान की आवश्यकता है और न किसी प्रकार के खर्च की। घरेलू सामान की मदद ही से आप पत्तियों की अत्यंत सुन्दर सुन्दर एलबमें बना सकते हैं।

पत्तियों की पांच प्रकार की एलबमें बनाने के लिए निम्न सामान की आवश्यकता होती है—

1. तरह तरह की पत्तियां
2. कुछ अखबार और कुछ सफेद कागज
3. वैसलीन
4. कांच की एक बड़ी बोतल
5. मोमबत्ती
6. दांत साफ करने का पुराना ब्रुश
7. काली स्याही या अन्य मनपसन्द रंग
8. छापेखाने की काली स्याही
9. कार्बन पेपर

एलबम नं० 1

पत्तियों की साधारण एलबम

अपनी मनपसन्द पत्तियां इकट्ठी करो। चिकने पटरे पर अखबार की कई तहें फैला कर उस पर पत्तियों को दूर दूर सजाओ। उनके ऊपर अखबार ढक दो। फिर ऊपर से उनको किसी भारी वस्तु से दबा दो।

एक दो सप्ताह तक पत्तियां इसी प्रकार दबी रहने दो। कुछ दिन बाद वे सूख जाएंगी। पत्तियों के सूख जाने पर उनको सावधानी से अपनी एलबम पर टांक लो। पत्ती के नीचे उसका नाम लिखो।

एलबम नं० 2

पत्तियों की छापों का एलबम

इसे बनाने के लिए बोतल की बाहरी ओर थोड़ा वैसलीन लगाओ। बोतल में ठंडा पानी भरकर उसे मजबूती के साथ बंद कर दो। अब मोमबत्ती जलाओ। उसकी लौ पर रख कर बोतल पर कालिख जमा करो।

अब अपनी मनपसन्द पत्ती को अखबार पर इस प्रकार रखो कि उसकी नसें ऊपर की ओर रहें। बोतल को पत्ती पर इस प्रकार बेलो कि कालिख पत्ती पर लग जाए। पत्ती को चिमटी से उठा कर अखबार के साफ स्थान पर रखो। जिस कागज पर तुमको छाप उतारनी है उसे पत्ती पर रखो। फिर किसी साफ बोतल को उस पर घुमाओ। यह ध्यान रखो कि कागज हिलने न पाए। पत्ती की बहुत सुन्दर छाप
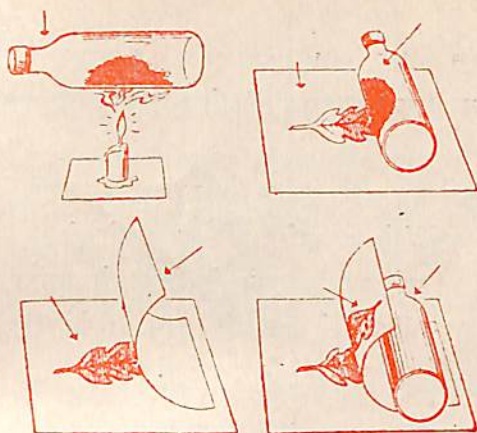
कागज पर उतर आएगी। इसी प्रकार अन्य पत्तियों की छापें भी उतारो।

एलबम नं० 3

पत्तियों की छिड़काव छापों का एलबम

यह बड़ा मजेदार एलबम है। इसके लिए सबसे पहले रंग बनाओ कपड़ा रंगने वाला रंग लेकर उसे थोड़े से गोंद में घोटो। अब जिस कागज पर तुमको छिड़काव छापें बनानी हैं उस पर अपनी मनपसन्द पत्तियों को सजाकर उनको पिन से कागज पर जड़ दो।

दांत साफ करने के पुराने ब्रुश को रंग में डुबो कर झटक लो

ताकि फालतू रंग निकल जाए। अब ब्रुश को कागज के ऊपर लाकर उसके तारों पर चाकू का फल फिराओ। कागज पर रंग के फुव्वारे पड़ेंगे।

सारे कागज पर इसी प्रकार फुव्वारे छोड़ो। इस में तुम एक ही कागज पर कई रंगों का प्रयोग भी कर सकते हो।

जब सारे कागजों पर छिड़काव हो जाए तो कागज को धूप या छांह में सुखाकर पत्तियों को हटा दो। तुम देखोगे कि कागज पर बड़ी मनमोहक छिड़काव छापें बन गई हैं।

एलबम नं० 4

पत्तियों की स्याही छापों की एलबम

एलबम नं० 2 में तुमने पत्तियों की काली छापें बनाने की विधि पढ़ी। प्रस्तुत उपाय से तुम पत्तियों की रंगीन छापें भी तैयार कर सकते हो।

जिस रंग की छाप तुमको तैयार करनी है, उस रंग की छापे-खाने की थोड़ी सी स्याही लो। उसे शीशे पर किसी पतली गोल शीशी से भली प्रकार बेल लो। अब विधि नं० 2 में बताए गए अनुसार पत्ती पर स्याही फिराओ और किसी साफ स्थान पर पत्ती रख कर उस पर सफेद कागज रखो और छाप बना लो।

इस प्रकार तुम एक ही पृष्ठ पर भिन्न भिन्न रंगों की भिन्न भिन्न छापें भी बना सकते हो।

एलबम नं० 5

पत्तियों की कार्बन छापों की एलबम

इसके लिए पत्ती की नस वाली सतह पर हल्का वैसलीन लगाओ। पत्ती को अखबार पर रखो। टाईपिंग का कार्बन पेपर पत्ती पर रखो। कार्बन पेपर पर दूसरा अखबार रख कर पत्ती वाले स्थान को मजबूती से रगड़ो।

पांच मिनिट के बाद अखबार और कार्बन पेपर पत्ती पर से हटा दो। पत्ती पर कार्बन की हल्की परत चढ़ जाएगी। उस पर सफेद कागज रख कर छाप उतार लो।

इस प्रकार विभिन्न पत्तियों की भिन्न भिन्न एलबम तैयार करके तुम अपने मित्रों में लोक-प्रिय बन सकते हो।

ध्यान रखो कि छापी गई प्रत्येक पत्ती का नाम छाप के नीचे लिखना न भूलो।

अगली बार हम इससे भी मजेदार खेल तुम को बताने वाले हैं। यदि तुम भी ऐसे खेल जानते हो तो हमको लिख भेजो।

बब्बू : पापा, आपने उस दिन कहा था न कि जिनको मैं एक दिन देख लेता हूं, सदा याद रखता हूं।

पापा : हां, कहा था। पर तुम यह सब कुछ क्यों पूछ रहे हो ?

बब्बू : आपका शेव करने का शीशा टूट गया है मुझसे।

× × ×

ब्रिटेन के मैडिकल कालेज के एक प्रोफेसर ने नोटिस बोर्ड पर यह लिखा: 'मेरे विद्यार्थी यह जान कर खुश होंगे कि ब्रिटेन की महारानी ने मुझे अपना निजी डाक्टर नियुक्त किया है।'

अगले दिन नोटिस बोर्ड पर इन पंक्तियों के ऊपर लिखा था : 'भगवान रानी की रक्षा करें।'

× × ×

छोटा मुन्ना और बड़ा मुन्ना एक ही खाट पर सोते थे। एक दिन बड़े मुन्ने ने छोटे मुन्ने के साथ सोने से इन्कार कर दिया। मां ने पूछा——'क्या छोटा मुन्ना आधी खाट से अधिक पर सोता है ?'

'नहीं तो।' बड़ा मुन्ना बोला।

'फिर तुमको शिकायत क्यों है ?' मां ने कहा।

'वह बीच की आधी खाट घेरता है मां।' बड़ा मुन्ना रोते रोते बोला।

× × ×

मम्मी ने तंग आकर मुन्नी को डांटा और चपत लगा दी। मुन्नी रूठ कर चारपाई के नीचे जा बैठी।

पापा मुसकरा कर आगे बढ़े। मुन्नी को मनाने के लिए वह स्वयं चारपाई के नीचे रेंगे। मुन्नी ने चारपाई के नीचे पापा को आते देखा तो बोली—'मम्मी बड़ी बुरी हैं। देखिए न, आपको भी चपत लगा दी।'

× × ×

अध्यापक : (कक्षा में) इतिहास के चार बड़े तानाशाहों के नाम बताओ? तुम बताओ मोहन।

मोहन : (तपाक से) जी, नेपोलियन, हिटलर, चू एन लाई और... और (सर खुजाकर) आपका नाम याद नहीं आ रहा है।

× × ×

राम और श्याम में 'तू-तू मैं-मैं' हो रही थी। राम ने श्याम को 'गधा' कहा। श्याम ने राम को 'उल्लू' कहा। श्याम ने गुस्से से पूछा—'तूने कभी गधा देखा भी है?' राम ने गुस्से से पूछा—'और तूने कभी उल्लू देखा है क्या?'

तभी मास्टर जी ने कड़क कर कहा—'अरे तुम दोनों क्यों लड़ रहे हो? पता नहीं, मैं यहां बैठा हूं।'

× × ×

पापा ने मुन्ना से कहा कि यदि कोई उनको पूछने आए तो वह

कह दे कि पापा घर पर नहीं हैं। कुछ देर बाद एक व्यक्ति आया।

व्यक्ति : मुन्ना, तुम्हारे पापा क्या घर पर हैं ?

मुन्ना : जी नहीं, वह बाजार गए हैं।

व्यक्ति : बाजार से वह कब तक वापिस आएंगे ?

मुन्ना : (कुछ देर सोच कर) जरा ठहरिए, अभी पूछ कर बताता हूं पापा से।

स्काउटिंग के नारे और गीत

नेता	सब मिलकर
1	
तन पर होवे	वस्त्र स्वदेशी
मन में होवे	भाव स्वदेशी
घर में होवे	माल स्वदेशी
कहो भाई	स्वदेशी, स्वदेशी, स्वदेशी !
2	
आलस को	मार भगा देंगे
उद्यम का	शंख बजा देंगे
बिछुड़ों को	पुनः मिला देंगे
भारत के बच्चे-बच्चे को	सेवा का पाठ पढ़ा देंगे !
3	
कौन देश है सब से न्यारा ?	प्यारा भारत देश हमारा !
कौन किसी से कभी न हारा ?	विजयी भारत देश हमारा !
कौन बना त्रिभुवन का प्यारा ?	सुन्दर भारत देश हमारा !

★ प्रयाण गीत ★

(मार्चिंग के लिए)

हिन्द के स्काउट हम

हिन्द के स्काउट हम, हिन्द की हैं शान हम,
हिन्द के निशान को बुलन्द हम किए चले।
प्रबल ज्वाल भाल हों, आंधियां कराल हों,
जलधि, गगन, भूमि पर, तने प्रलय के जाल हों।
किन्तु हम रुकें नहीं, चलें चलें, बढ़े चलें,
हिन्द हेतु जान दें, हिन्द हेतु प्राण दें।
हिन्द हेतु हम सभी, सहर्ष रक्त दान दें,
जय हिन्द, जय हिन्द, बोलते चले चलें।

देश का सिपाही हूं

नन्हा मुन्ना राही हूं, देश का सिपाही हूं,
बोलो मेरे संग जयहिन्द, जयहिन्द, जयहिन्द, जयहिन्द !
रस्ते पे चलूंगा न डर डर के, चाहे मुझे जीना पड़े मर - मर के,
मंजिल से पहले न लूंगा कहीं दम, आगे ही आगे बढ़ाऊंगा कदम।
नया है जमाना मेरी नई है डगर, देश को बनाऊंगा मशीनों का नगर,
भारत किसी से रहेगा नहीं कम, आगे ही आगे बढ़ाऊंगा कदम।

बड़ा हो के देश का सिपाही बनूंगा,
दुनिया की आंखों का तारा बनूंगा,
रखूंगा ऊंचा तिरंगा परचम,
आगे ही आगे बढ़ाऊंगा कदम।

शान्ति की नगरी है मेरा यह वतन,
सब को सिखाऊंगा मैं प्यार का चलन,
दुनिया में गिरने न दूंगा कहीं बम।
आगे ही आगे बढ़ाऊंगा कदम।

मिलिन्द चित्र पहेली

संख्या-1 का शुद्ध हल

मिलिन्द चित्र पहेली में जितने छोटे बड़े बच्चों के भाग लेने की आशा थी, उतने बच्चों ने भाग नहीं लिया। हमारे पास कुल 927 हल आए।

प्राप्त हलों में बहुत सारे हल कटे फटे और अस्पष्ट थे। कई हल हमें बैरंग भी मिले, जिनको हमने बैरंग फीस देकर छुड़ाया। (किन्तु अब से कोई भी बैरंग डाक से भेजा गया हल नहीं छुड़ाया जाएगा। हल भेजने से पहले यह देख लेना आवश्यक है कि उस पर टिकट लगाया गया है अथवा नहीं) बहुत से हलों में बड़ी मजेदार मजेदार बातें लिखी थीं। किसी ने भालू को चूहा लिखा, किसी ने रोटी को केक लिखा, किसी को लिखना ही नहीं आया। बहुतों ने 'ऊँट' को 'उंट' लिखा। 'सील' को 'सिल' लिखा और बहुतों की लिखाई इतनी गंदी थी कि पढ़ने के लिए बहुत जोर लगाना पड़ा।

सर्वशुद्ध हल किसी का भी नहीं निकल पाया, इसका हमें दुख रहा। अतः सम्पादिका जी के अनुरोध पर 50 रु० का पुरस्कार हम उन छोटे बड़े बच्चों में बांट रहे हैं जिनके हल में एक से लेकर चार गलतियां तक निकली हैं। सर्वशुद्ध हल पृष्ठ सं० 94 पर छपा है। यदि

गलती से किसी का नाम रह गया हो तो वह हमें 30 अगस्त '65 तक पत्र भेज दे। पुरस्कार की धन-राशि सितम्बर' 65 में पुरस्कृत प्रतियोगियों को भेज दी जाएगी।

दो गलतियां वाले 2 हल मिले --

श्री युगल किशोर साहू पुत्र श्री नवल किशोर साहू
नवल बिल्डिग्स, मोती झील, मुजफ्फरपुर (बिहार)
(इनकी लिखाई काफी अच्छी है)

2. आशा रानी द्वारा श्री मक्खन लाल बंसल, गांधी चौक बुलन्दशहर (उ० प्र०) (इनकी भी लिखाई पसंद आई)

इन दोनों विजेताओं को दस दस रुपए का नकद पुरस्कार (अच्छी पुस्तकें खरीदने के लिए) भेजा जाएगा।

तीन गलती वाले 3 हल प्राप्त हुए --

1. श्री हिमांशु मोहन, कक्षा 10 बी.
वी. एन. गवर्नमेंट इन्टर कालेज, ग्यानपुर
वाराणसी (उ० प्र०)
(लिखाई अच्छी है)

2. श्री राम कुमार गोयल द्वारा
मैसर्स मित्तर सेन राम कुमार गोयल
भट्टू कलां (हिसार)
(लिखाई सुधारने की आवश्यकता है। भालू को भालु लिखा था, यह गलत है)

3. श्री अशोक कुमार
द्वारा अशोक बुक स्टाल, रेल्वे रोड, रुड़की
(लिखाई खराब है, मेहनत करनी चाहिए)

इन तीनों प्रतियोगियों को छः छः रुपए भेजे जाएंगे, श्रेष्ठ पुस्तकें खरीद कर पढ़ने के लिए।

चार गलती वाले भी हमें केवल तीन हल मिले ––

1. श्री सन्तोष कुमार निगम
द्वारा श्री जे. पी. निगम, नई सब्जी मन्डी के सामने, इतवारा, भोपाल (म० प्र०)
(लेख थोड़ा परिश्रम और मांगता है)

2. श्री भाना भाई सी पटेल
क्वार्टर नं० 39, दामोदर रोड,
पो० साकची, जमशेदपुर––।
(लिखाई पर और परिश्रम करो)

3. श्री बंशीलाल मंगल,
द्वारा सूरज मल मुन्ना लाल धारवाला,
9, महारानी रोड, इन्दौर (म० प्र०)
(लिखाई तो अच्छी है, पर रेलगाड़ी को रेलगाढ़ी लिखा है)

इन तीनों विजेताओं को चार चार रुपए अच्छी पुस्तकों को खरीदने के लिए भेजे जाएंगे।

मिलिन्द चित्र पहेली-2

अक्तूबर 65 के अंक में हम आपके लिए एक और अनौखी तथा मजेदार चित्र पहेली प्रकाशित करेंगे। उसमें 9 चित्र होंगे। प्रत्येक चित्र का नाम तीन प्रकार से लिखना होगा। आशा है, उसमें और अधिक छोटे बड़े बच्चे भाग लेंगे।

चित्र पहेली—1 का शुद्ध हल

1. रे	ल	गा	ड़ी	2. सी	ल
गि	3. क्रि	सा	न		4. मु
स्ता	ता		5. स	वा	र
नी	ब	6. रो	टी		गा
ज		गी	7. भा	गा	8. स्के
हा		9. पु	लू		टिं
ज	10. क	ल			ग

बच्चों के लिए दिलचस्प और सुन्दर सचित्र कहानियां

अन्धा जादूगर	मसूद जहां	0.40
अनोखा मुकद्दमा	राजदान एम० ए०	0.44
सोने की बकरी	राजा अली अहमद खां	0.40
खूनी डाकू	आदिल रशीद	0.44
गुमशुदा लड़की	बदनाम रफी	0.50
चाँद की दुल्हन	लुत्फी रिजवानी	0.40
हीरों का सौदागर	इशरत रहमानी	0.40
अन्धा शहजादा	सईद लुध्यानवी	0.35
बर्फ का आदमी	मसूद जहां	0.35
दो काम चोर	—	0.35
बौनों की दुनिया	सईद लुध्यानवी	0.35
गरीब शहजादी	सिराज अनवर	0.40
मोटर नं० ७८६	राजा मेहदी अली खां	0.40
नीली खोपड़ी	शकीलुर्रमान	0.35
आखरी शरारत	सिराज अनवर	0.40
खूनी दरवाजा	इफ्तखार अहमद इकबाल बी० ए०	0.40
रशीदा	शिल्प-कला	3.50
जीनत	कशीदाकारी	5.50
शमा	कशीदाकारी	4.50
हसीन	कशीदाकारी	2.50
दुल्हन	कशीदाकारी	2.50
कुदसिया	कशीदाकारो	1.00
शबनम	कशीदाकारी	1.00

मिलने का पता : शमा प्रकाशन, आसफअली रोड, नई दिल्लो

मुद्रक प्रकाशक रत्नप्रकाश शील ने युगान्तर प्रेस मोरी गेट, दिल्ली-6 में छपवा कर मिलिन्द, 3746, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।